अग्रवालों के इतिहास में प्रथम बार

अग्रसेन महाराज
का
जीवन-चरित्र

लेखकः—
गि० प्र० मीत्तल (अग्रवाल)
साहित्य सुधाकर, आर. एम. पी. नं० ६०१
हिण्डौन सिटी (राज०)
(सर्वाधिकार लेखक के आधीन हैं।)

प्रथमबार १००० जनवरी १९७५
मूल्य- २) रु०
डाक खर्च- १) रु० अलग

वन्दना

युग पुरुष तुम्हें शत–शत वन्दन
हे अग्रसेन शत अभिनन्दन

[१]

तुम अभिनव–युग के महा प्राण
ओ ! अग्रवंश का किया त्राण।
हे युग पुरुष—हे युगाधार,
अभिनन्दन है शत–शत वन्दन ॥

[२]

तुम नव्य नभ के नव विहान,
तुम अग्रवंश उत्पत्ति स्थान ।
तुम साम्यवाद के सूत्रधार,
अभिनन्दन शत—शत अभिनन्दन ॥

[३]

तू पद दलितों का क्रान्ति घोष,
तू शोषित जन का शक्ति कोष ।
हे क्रान्ति पथ के महा पथिक,
अभिनन्दन है शत–शत अभिनन्दन ॥

कल्याणमल झण्डेवाला

भूमिका

प्रारम्भ से ही मुझे सामाजिक कार्यों में रुचि रही है। गत २० वर्षों से मैं अग्रवाल समाज के विभिन्न कार्यों में प्रत्यक्षतः भाग लेता रहा हूं। मैं चुनावों से हर समय दूर रहने का प्रयत्न करता रहा हूं।

गत १० वर्षों से मैं यह प्रयास करता रहा हूँ कि श्री अग्रसेन जी का कोई प्रमाणिक इतिहास हो–इस हेतु मैंने विभिन्न पुस्तकों में पढ़ा, तथा उनमें से उपयोगी सामग्री का चयन करता रहा। समय २ पर अग्रसेन वाणी मासिक में इस संबन्ध में लेख लिखे। जैसे जैसे मेरे पास सामग्री एकत्रित होती गई मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा–कि यह पुस्तक मुझे प्रकाशित करनी चाहिए। आखिर मित्रों के सहयोग से आपकी कृपा दृष्टि से मैं इसमें सफल हुआ हूं।

मेरा प्रयास अग्रवाल समाज में अपने संस्थापक की प्रमाणिक जानकारी देने में जितना समर्थ हो सकेगा-मुझे प्रसन्नता होगी।

विद्वान पाठकों, सहयोगियों, के सुझावों का मैं सदैव आभारी रहूँगा। पुस्तक में जो त्रुटियां हैं वे मेरी अल्प बुद्धी के कारण हैं जो श्रेष्ठ बन पडा है वह सब कृपालु पाठकों विद्वानों की कृपा का फल है।

पुस्तक में जिन विद्वानों के कथन, उक्तियां, संदर्भ दिये हैं उन सभी मैं आभारी हूं।

इस पुस्तक को मैं मेरे पिता श्री मोतीलाल अग्रवाल करौली वाले एवं माता श्रीमति मिश्री देवी के चरणों में समर्पित करता हूं।

मेरे बारे में

जनम- ८ मई सन् १९३७

शिक्षा:- (१) सन् १९५५ में मैट्रिक परीक्षा पास की।

(२) सन् १९६४ में जोधपुर से R.N.C. नर्सिंग का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा किया।

(३) सन् १९७१ में राज० होम्यो० बोर्ड से रजिस्टर्ड हुआ।

(४) सन् १९६७ में अनुभव के आधार पर आयुर्वेद में रजिस्ट्रेशन लिया।

(५) १९७१ में राजस्थान फार्मेसिष्ट रजिस्ट्रेशन ट्रब्यूनल से रजिस्टर्ड फार्मेसिष्ट बना।

मेरे वंश के पूर्वज पन्नालाल पटवारी की संतान हैं जो कैलादेवी (करौली) में निवास करते थे, उनके दो पुत्र हुए श्री भोंरीलाल, नारायणलाल। भोंरीलाल के एक पुत्र हुए-जिनका नाम श्री मोतीलाल है। मोतीलाल के बाल्यकाल में ही पिता श्री भोंरीलाल का स्वर्गवास होगया, देव कोप से सभी प्रकार से परिवार छिन्न-भिन्न होगया। धंधे की तलाश में काफी समय तक इधर उधर घूमते रहे, अंत में सन् १९४८ में हिण्डौन में एक छोटी सी दुकान गौशाला पर खोली। आज भगवान की कृपा से सभी प्रकार का आनन्द है। श्री मोतीलाल के दो पुत्र हैं-(१) श्री गिर्राज प्रसाद (२) गोपाललाल।

स्व वंश परिचय

- पन्नालाल पटवारी
  - भोंरीलाल
    - मोतीलाल
      - गिर्राजप्रसाद
        - राजेन्द्रकुमार
        - राजकुमार
      - गोपाललाल
  - नारायणलाल

श्री श्री १०८ श्री अग्रसेन जी महाराज

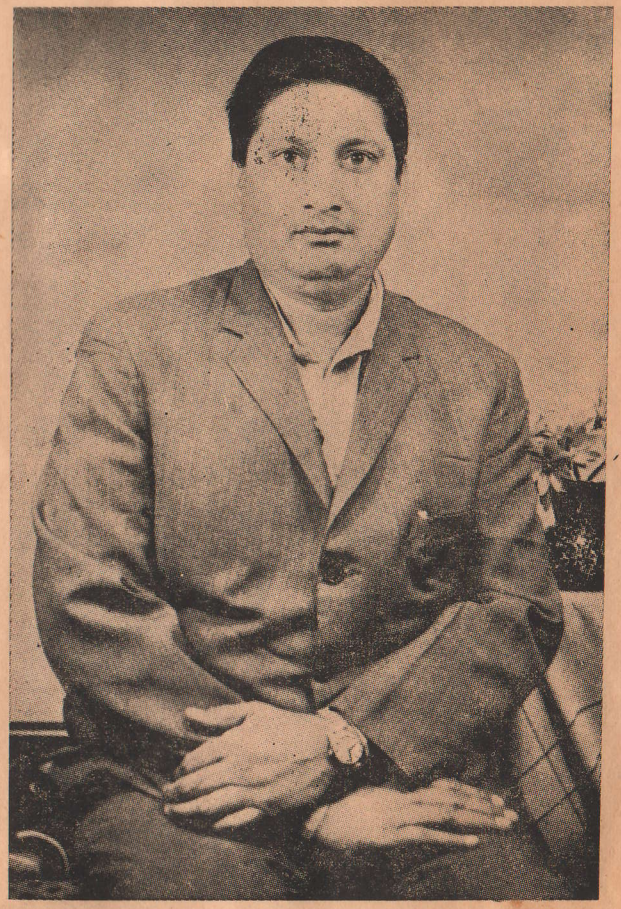

गिर्राजप्रसाद मीत्तल (अग्रवाल)

साहित्य सुधाकर, R. M. P.

॥ अग्रसेनाय नमः ॥

भारतवर्ष में वैश्य वर्ग की एक विशेष स्थिति है। वेदों में इसे समाज का उदर माना जाता है। यानी जिस प्रकार उदर के खाली होने पर मानव का जीवित रहना असम्भव है उसी प्रकार वैश्य वर्ग का समाज में विशिष्ट स्थान है। वैश्य शब्द की उत्पत्ति वेदों के विश्य यानी व्यापार शब्द से हुई है जो जाति व्यापार, पशुपालन, कृषि आदि करे उसे वैश्य माना है। इतिहास के प्रारम्भ में वर्ण जातिगत, जन्मगत नहीं था–वह कर्मगत था, अतः क्षत्रिय अपने कर्म से वैश्य, क्षत्रिय-ब्राह्मण ब्राह्मण राज्य कर्ता, वैश्य शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय बन सकता था। इतिहास में वैश्य वर्ग ने भी समय के साथ २ काफी उत्थान और पतन का मार्ग तय किया है।

आज के वैज्ञानिक युग में जब जातिवाद का अधिक महत्व नहीं होना चाहिये। परन्तु स्व का ज्ञान होना आवश्यक है। परतंत्रताके १५०० साल में भारतीय इतिहास के साथ भारी अन्याय हुआ है। उसी काल में हमारा इतिहास भी लुप्त हो गया है। समय आगया है विद्वानों को इस ओर ध्यान देकर इतिहास के उदर में छुपे हुए पूर्वजों की गौरव गाथा को निकाल लें। आईये हम सभी अग्रवाल समाजकी उत्पत्ति, उसका विकास, प्रारम्भ आदि पर इतिहास के परिवेक्ष्य में अध्ययन करें।

नाभागादेरिष्ट

मनु पुत्रों में अत्यन्त प्रतिभाशाली और वीर थे। गाय ब्राह्मण की रक्षा प्राण प्रण से करते थे। एक बार इनके राज्य पर किसी शत्रु ने आक्रमण किया। राजा ने वीरता पूर्वक सामना किया, परन्तु पराजित हो गये। पराजित होने पर अपने राज्य को छोडकर जंगल में चले गये, और कृषि एवं वाणिज्य करते हुए अपना जीवन यापन करने लगे तथा अपने को वैश्य कहने लगे। अर्थात वैश्य कर्म स्वीकार कर लिया। इनके नाभाग और अरिष्ट नामक दो पुत्र हुए।

नाभागारिष्ट पुत्राश्च क्षत्रिया वैश्यतां गता

(हरि वश पुराण अध्याय १० श्लोक ३०)

नाभागादेरिष्ट के दोनों पुत्र जिनकी माता वैश्य कन्या थी, तथा पिता क्षत्रिय था, परन्तु कर्म से वैश्य था, वैश्य ही कहलाये, परन्तु अपने ब्राह्मणौचित कर्म के कारण ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो गये।

नाभागारिष्ट पुत्रौ द्वौ वैश्यौ ब्राह्मणतां गैतां।
करूषस्य च कारूषाः क्षत्रियाः युद्ध दुर्मुदाः॥

(हरिवंश पुराण अध्याय ११ श्लोक ६)

भलन्दन

इन्हींके सुपुत्र हुए भलंदन, जो महान विद्वान थे। तथा इन्होंने अपने कर्मों से पुनः ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया। इनके पुत्र वात्सप्रीति और प्रांसु वेदों के मंत्र प्रवर ऋषि हुए। इस प्रकार इन्होंने अपनी निष्ठा और त्याग से वैश्य समाज की उन्नति की तथा उसे समाजमें उच्च आसन दिलाया।

वत्स (वात्सप्रिय)

यह एक वेद कालीन महापुरुष हैं–ये प्रारम्भ से ही महान त्यागी और वेदों के प्रचेता रहे हैं। इन्हें वैश्यों में प्रथम मंत्र प्रवर ऋषि माना है।

मांकिल

यह भी वैश्यों के मंत्र प्रवर ऋषि हैं। इन्होंने अपनी विद्वता से अपने कुल का नाम भी अति प्रकाशवान किया।

भलंदनश्च वत्सश्च संकीलश्चैते त्रयः
एते मंत्र कृतश्चैव वैश्यानाम् प्रवराः स्मृताः

(ब्रह्माण्ड पुराण अंश २ अध्याय ३२ श्लोक १२१, १२२)

भलन्दकश्च वासाश्च संकीलश्चैव ते भयः
एते मंत्र कृतो ज्ञेया वैश्यानां प्रवरा सदाः

(मत्स्य पुराण अध्याय १४५ श्लोक ११६, ११७)

अर्थः– भलंदन वत्स और मांकिल ये मंत्र प्रवर ऋषि वैश्यों के पूर्वजों में हुए हैं। अतः सब वैश्यों के तीन ही प्रवर हैं।

धनपाल

मांकिल के पुत्र धनपाल (भागवत का कुवेर) हुआ। इसके आठ पुत्र हुए। जिनके नाम शिव, नल, नँद, कुमुद, प्रबल, वल्लभ, कुन्द, शेखर थे। इनका शादी वात्सप्रिय के द्वितीय पुत्र के वंश में उत्पन्न वैशालक वंश के

संस्थापक, वैशाली नगर के रचियता राजा विशाल की कन्यायों से हुआ। ये अपने समय के भारी प्रसिद्ध राजा हुए हैं। शिव के वंश में वहुत पीढियों बाद वल्लभ नामक राजा हुए। इनके ही पुत्र रूप में अग्रसेन (श्रुतायु) पैदा हुए। अग्रसेन का जन्म दक्षिण में वल्लभ राज्य के प्रताप नगर में हुआ। वहीं उनका लालन पालन हुआ। बडा होने पर पंच गोदावरी पर तप किया। और वापिसी में अहिच्छया नगरी (कोलापुर) के नरेश की लडकी से शादी की।

प्रताप नगर दो हैं एक भडोंच में अंकलेश्वर के पास दूसरा प्रताप नगर (वोसदा) वैश्यों का सूरत में है। यहीं दूसरा स्थान अग्रसेन जी का जन्म स्थान है। ये लोग नाकों से व्यापार (समुद्र व्यापार) नाक (वंदर-गाह) के कारण नाग कहलाये थे। कुछ लोगों के अनुसार मैसूर में अगर का व्यापार करने के कारण अग्र (अगर) भी कहलाये। इनका जन्म प्रताप नगर (वांसदा) में ही हुआ।

इसके पूर्व कि हम अग्रवंश के कई अन्य प्रसिद्ध नरेशों के जीवन पर प्रकाश डालें। अग्रसेन महाराज की वंशावली पर विचार करें।

वंश वृक्ष

ब्रह्मा
|
विवस्वान
|
मनु

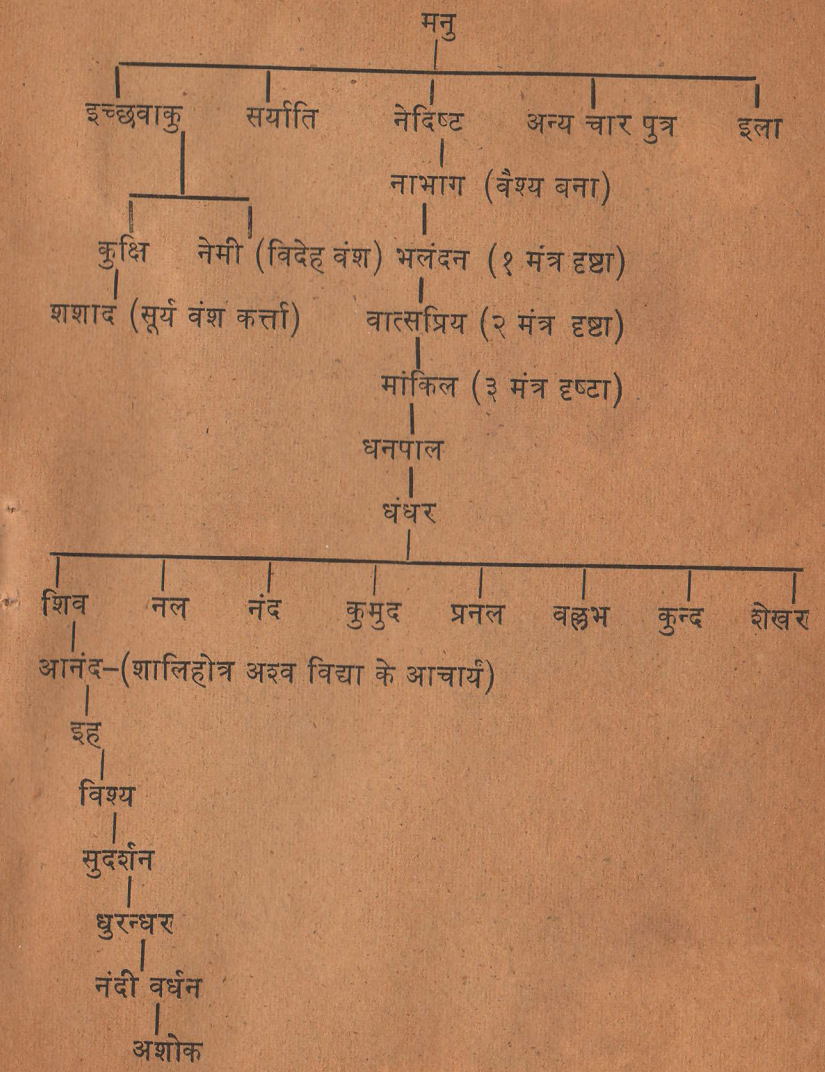

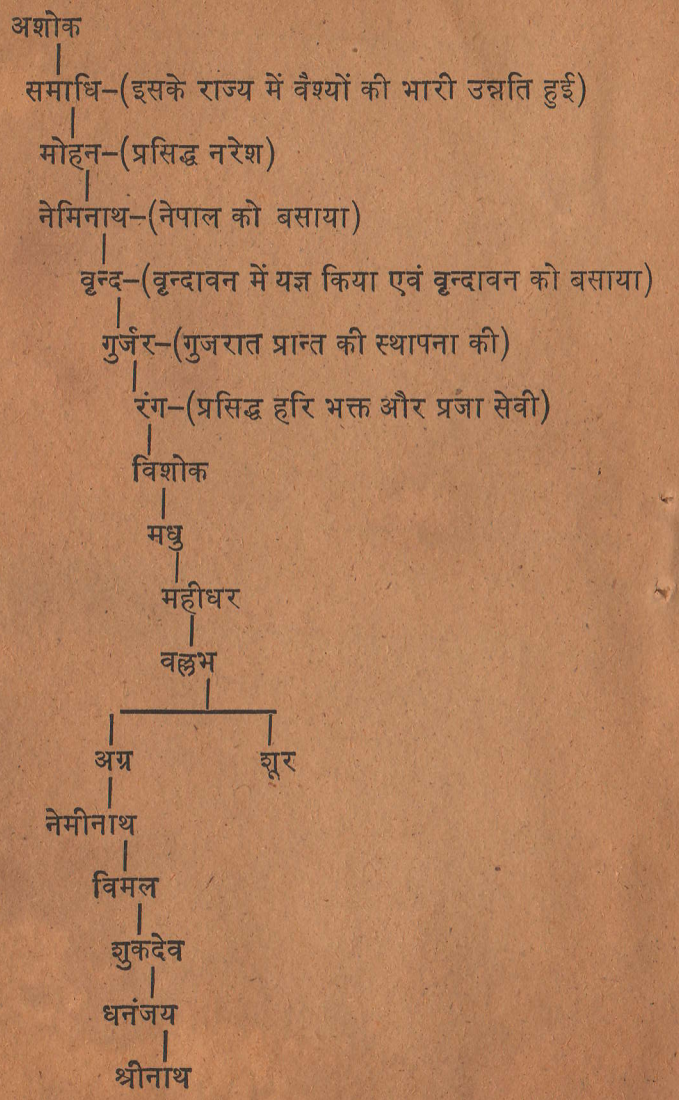

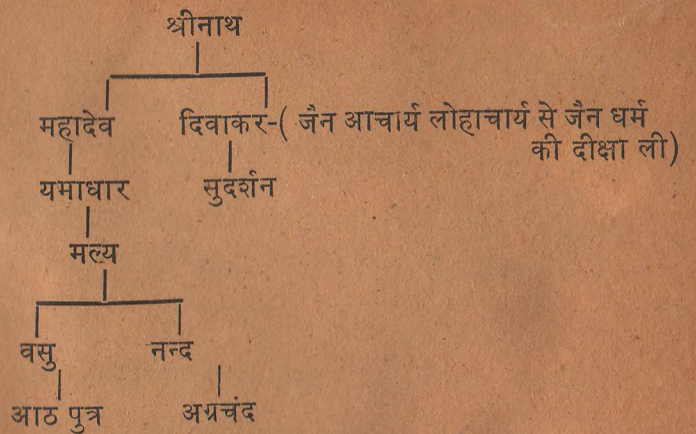

नेमिनाथ प्रसिद्ध राजा हुआ, इन्होंने नेपाल को बसाया इनके पुत्र वृन्द ने वृन्दावन क्षेत्र में यज्ञ किया और उसे विकसित करके नगर का रूप दिया। गुर्जर के १०० पुत्र हुए जो याज्ञवल्य ऋषि के श्राप से शूद्र होगये। रंग राजा बने– जो अत्यंत ही श्रेष्ठ और तपस्वी थे।

अग्रसेन के जन्म की स्थिति

अग्रसेन के जन्म के पूर्व वैश्य जाति एक प्रकार से षडयंत्र पूर्वक अति दयनीय स्थिति में पहुँचा दी गई थी। हमें वर्तमान समय में उपलब्ध अधिकांश पुराणों में महाराज अग्रसेन का वर्णन नहीं मिलता। इसके प्रमुख कारण निम्न हैं।

१. अग्रसेन जी का राज्य इतना छोटा रहा हो, कि जिनका उल्लेख करना किसी भी पुराण पुरुष ने अथवा ग्रन्थकार ने उचित नहीं समझा हो।
२. अग्रसेन जी का राज्य वास्तव में कहीं रहा ही नहीं हो, यह केवल कपोल कल्पना मात्र ही हो।

३. पुराणों की स्थापना के पश्चात अग्रसेन जी का राज्य रहा हो।

४. अग्रसेन जी का राज्य भी रहा हो, वह प्रभावशाली भी हो, परन्तु योजनाबद्ध ढङ्ग से उसे पुराणों में स्थान नहीं दिया गया हो।

उक्त सभी कारणों की विवेचना करने पर ऐसा लगता है कि चौथा कारण ही प्रमुख है। ऐसा तो महाभारत के निम्न श्लोक से स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

क्षत्रियो उपनिवेश्च वैश्य शूद्र कुलानि च।
शूद्राभि राजश्च दरदाः काश्मीराः पशुभि सहः।

(भीष्म पर्व ६/६७)

क्षत्रियों के उपनिवेश वैश्यों एवं शूद्रों के जनपद। उक्त श्लोक स्पष्ट घोषणा करता है कि इस समय क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों, के राज्य हैं। परन्तु महाभारत में क्षत्रिय, राजाओं के अलावा किसी भी नरेश के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है। युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ एवम् कर्ण विजय के प्रसंग में भी मात्र स्थानों का उल्लेख है। राजाओं के नामों का उल्लेख नहीं है।

इस विषय में हमें प्रधानतया एक बात का ध्यान रखना होगा कि महाभारत तक देश की शासन न्याय व्यवस्था क्षत्रिय ब्राह्मण धुरी के आधार पर चल रही थी, जैसे शुक्राचार्य महर्षि की पुत्री की शादी ययाति राजा के साथ, सर्याति राजाकी पुत्री की शादी च्यवन ऋषिके साथ, इसी प्रकार परशुराम की माताजी क्षत्रिय थीं। इसी प्रकार व्यास जी धीवर कन्या से उत्पन्न हुए थे। वशिष्ठ जी की शादी वैश्या से हुई विश्वामित्र राजा गाधी के पुत्र थे। परन्तु कहीं पर इनके चरित्र की मीमांसा या आलोचना नहीं की गई है। यहां तक कि ब्राह्मण चाहे वह निरक्षर

अज्ञानी हो तो भी श्रेष्ठ बतलाया गया है। यह सब लिखने का उद्देश्य मेरा वर्ग विद्वेष नहीं है, अपितु मैं कहना चाहता हूं कि क्षत्रियों के आधीन ब्राह्मण थे। ब्राह्मणों की जीविका इनके सहारे चलती थी, अतएव उन्होंने प्रत्येक स्थान पर मात्र क्षत्रियों का ही वर्णन किया है। इसलिये अग्रसेन जी का वर्णन किसी पुस्तक में न मिलना आश्चर्य का विषय नहीं है।

अग्रसेन जी का वर्ण

कुछ लोग अज्ञान वश ऐसा मानते हैं कि अग्रसेन जी क्षत्रिय थे, वास्तव में ऐसा नहीं है जैसा कि उक्त श्लोक से स्पष्ट होता है कि वैश्यों का जनपद। अग्रसेन जी मूलतः वैश्य ही थे। और मनु के मानस पुत्र नाभदेरिष्ट ने वैश्य कन्या से शादी की थी। अतः ये वंश प्रारम्भ से ही वैश्य वंश माना गया है। अतः अग्रसेन जी वैश्य वंश के ही थे।

अग्रसेन जी का वंश परिचय

महाभारत में आग्रेय गण राज्य का नाम उल्लेख मात्र एक वार नकुल के राजसूय यज्ञ हेतु अग्रेय गण राज्य विजय के संदर्भ में ही आया है। इसके उपरांत न तो किसी स्थान पर आग्रेय गण राज्य का उल्लेख है न वहां के राजा के नाम का उल्लेख है। फिर यह कभी भी संभव नहीं था कि यदि अग्रसेन जी उस समय होते तो युद्ध में सम्मिलित नहीं होते, बल्कि इतिहास एवं महाभारत का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुँच रहा हूँ कि महाभारत में सैकडों स्थानों पर अम्वष्ठ का वर्णन है। अम्वष्ठ नरेश का किसी किसी स्थान पर श्रुतायु नाम आया है महाभारत नामानुक्रमुणिका पृष्ठ ३६० एवं अम्वष्ठ नरेश के भाई का नाम अच्तायु नाम आया है। महाभारत नामानुक्रमिणका

पृष्ठ (५) इसके अलावा वंश परिचय का कोई उल्लेख नहीं है। मूल रूप से प्रमुख बात यह है कि अम्वष्ठ नरेश को विभिन्न स्थानों पर अम्वष्ठ अथवा अम्वष्ठाधिपति अम्वष्ठ वीर, एवं निवासियों को अम्वष्ठ महारथी के रूप में लिखा गया है। अम्वष्ठ राजाने महाभारत युद्ध में भीष्म के पहियों की रक्षा की थी। ये भीष्म के कोंच व्यूह में जंघा भाग में खडे थे. (भीष्म ७५-२२) युद्धमें युधिष्ठर पराजित हुए, (भीष्म पर्व ८४/६/१६) इन्होंने अर्जुन पर आक्रमण किया अर्जुन द्वारा इनकी मृत्यु हुई (द्रोणा पर्व ६३/६०/६६) अम्वष्ठको पहिले पाण्डवों द्वारा भी युद्ध निमन्त्रण भेजने का निश्चय किया गया था। (उद्योग पर्व ४/२३) महाभारत के प्रथम दिन इसका इरावान से युद्ध हुआ (भीष्म ४५/६६/७१) इसी प्रकार महाभारत में शूरसेन राजा का वर्णन भी अभिशाह राजा के साथ आता है जिसमें शूरसेन, अभिषाह, त्रिगत, शिव, एवं अम्वष्ठ की उपस्थिति मानी गई है। (भीष्म पर्व १८/१२/१) इसी प्रकार शूरसेन नगर जनपद रूप में मथुरा को माना है। और शूरसेन का वर्णन है।

(भीष्म पर्व ६/६७)

महाभारत में नकुल विजय के वर्णन में रोहतक के पास मरू भूमि बतलाई है। जबकि कर्ण विजय में आग्रेय गणराज्य को जीतना लिखा है। कर्ण की विजय यात्रा महाभारत से १४ वर्ष पूर्व की बात है।

१. राजा अग्रसेन के पूर्वज राजा धनपाल और वैशालक वंश के राजा विशाल समकालीन थे।

२. राजा वैशालक अयोध्या के राजा कल्माष पाद और काशी के राजा धर्मकेतु के समकालीन थे।

३. महाभारत के पश्चात युधिष्ठर ने ३६ वर्ष राज्य किया। कलिकाल के प्रथम दिन राज्य त्यागा।

४. राजा अग्रसेन का जन्म धनपाल की २१ वीं पीढी में हुआ है। राजा अग्रसेन का विवाह नाग वंश में हुआ है अग्रसेन के राज्य त्याग के समय कलिकाल को १०० वर्ष बीत चुके थे।

५. जब ये गद्दी पर बैठे द्वापर समाप्त होरहा था इनकी उम्र २५ वर्ष थी।

६. महाभारत के पश्चात् नागों ने उत्पात किया और परिक्षत को मार डाला था। जन्मेजय ने नागों को समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया।

७. कलिकाल ५०७६ सन् १६७४ में चल रहा है। यदि कर्ण विजय कलि से ५० वर्ष पूर्व माने तो अग्रसेन ३५ वर्ष में कौरवों के अधीन होगया।

८. ५१२६ वर्ष गणराज्य की स्थापना हुई थी।

अग्रेय गणराज्य की स्थापना के पूर्व छोटे २ उत्तर के राजा अपने पडौसियों से भयभीत रहते थे। जरा संघ ने इन सभी को वश में कर रखा था। महाभारत का निम्न श्लोक देखिये।

उदीच्यश्च तथा भोजाः कुलान्याष्टाः दशः प्रभो
जरा संघ भया देव प्रतीची दिशा मास्थिता ॥२५॥

शूरसेना भद्रकारा वोधा शाल्वा पदश्चरा।
सुस्थलाश्च सुकुटश्च कुलदा कुति भ सह ॥२६॥

युधिष्ठिर इस प्रकार उत्तर दिशा में निवास करने वाले भोज वंशी अठारह कुल जरासंघ के भय से पश्चिम दिशा को भाग गये हैं। शूरसेन भद्रकारा, वोधशाला, पटच्चर, सुस्थल, सुकटं, कुलिंद, शाल्यवान आदि

राजा भी दक्षिण में भाग गये हैं। परशुराम के भय से लुक छिप कर वचे लगभग १०० राजा हैं जो सभी अपने को इच्छवाकु (सूर्य वंशी वतलाते हैं। इनमें जो इन सभी को अपने वाहुवल से जीतले वही चक्रवर्ती सम्राट कहलाता है।

स्थान सम्बन्धी मतभेद

किसी भी राजा को जो अपने राज्य की स्थापना करता है वह सुरक्षा, कृषि, उद्योग संबंधी आवश्यकताओं की दृष्टि से उचित स्थान का चयन करता है। अतः अग्रसेन जी ने भी इसी प्रकार की एक भूमि देखी।

ततो वहु धनं रम्यं गवाढयं धन धान्यवत्
कार्तिकस्य दयितं रोहितक मुपा द्रवत्

तत्र युद्धं महाभ्यासी धुरमैत मयूरकैः
मरू भूमि कार्तिकस्य तथैव वहु धन्यम्

(समापर्व ३५/४/६)

रोहतक के पास धन धान्य गायों से प्रचुर आग्रेय गणराज्य है।

भद्रान् रोहित काश्चैव आग्रेययान् मालवानपि
गणान् सर्वान विनिजित्य निति कृत प्रहसन्निव।

(वनपर्व कर्ण विजय २०)

हे भद्र-रोहतक-आग्रेय मालव आदि समस्त गणराज्यों को कर्ण ने नीति से ही जीत लिया।

मेखलाश्वच त्रिगर्ताश्च, दर्शणकाश्च कशेरुकान्।
मालवान्यवनाश्चैव पुलिंदान् काशी कौशलान् ॥

मेखल, त्रिर्गत, दर्शण, कशेरू, मालव पुलिंद, काशी, कौशल,

(विराट पर्व कीचक वध ८०)

राजा विराटने कीचक की सहायता से मालव गण राज्य को जीता।

मालव योद्धेय, अम्वष्ठ गणराज्यों का उल्लेख दुर्योधन द्वारा अपने पिता को राजसूय यज्ञ का विवरण सुनाने में आया है-जिसमें वह अपने पिता से कहता है कि हे पिता युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में मालव आग्रेय, योद्धेय गणराज्य के अधिपति भेंट लेकर आये। ये सभी सुगंधित पदार्थ लाये थे।

शिविस्त्रि गर्तानम्वष्ठान् मालवान् पंच कपर्टान्।
तथा माध्यमिकाश्चैव वाट धान द्विजानथ, ॥

शिव त्रिगर्त अम्वष्ठ मालव पंच कपर्टान् देशों को जीत लिया।

महाभारत के भली भांति अध्ययन करने पर मेरा निष्कर्ष है कि अग्रेय मालव गणराज्य एक ही था उसकी सीमायें उत्तर में कशेरू, योद्धेय गणराज्य पश्चिम में वर्तमान दिल्ली, पूर्व में मत्स्य संघ एवम् दक्षिण में वर्तमान विंध्य प्रदेश होगा। इसी प्रकार मालव गणराज्य अत्यन्त वैभवशाली राज्य था।

कौरव कुल से संबन्ध

आग्रेय गणराज्य कौरव कुल की राजधानी के नजदीक ही था अतः इनके उनसे घनिष्ट संबन्ध थे धृतराष्ट्र की एक पत्नी वैश्य कन्या थी,

जिससे युयुत्सु नाम के पुत्र का जन्म हुआ था। (देखिये महाभारत शल्य पर्व ८५) महाभारत युद्ध के पूर्व जब दुर्योधन ने यह पूछा था कि जो इस युद्ध को अन्याय कारक मानता हो अपना हाथ उठाये तभी युयुत्सु सेना सहित युद्धको अन्यायकारक कहकर अलग होगया था और युद्धके पश्चात् श्री कृष्ण की सहायता से दुर्योधन की स्त्रियों को नगर में लाया था। युयुत्सु की सहायता से युधिष्ठर ने सभी कौरवों का तृपण किया था।

अम्वष्ठ नरेश महाभारत युद्ध में भी सम्मिलित हुआ था। भीष्म के कोंचव्यूह में ये जंघा के स्थान पर था। दुर्योधन ने स्वयं अम्वष्ठ से कहा था कि हे अम्वष्ठ वीर तुम्हें हर प्रकार से भीष्म की ही रक्षा करनी है।

अग्र नगर की स्थापना

जैसा कि ऊपर वतलाया जा चुका है भारत के उत्तरी क्षेत्र युद्ध की दृष्टि से असुरक्षित थे। प्रतिदिन आक्रमण का भय रहता था। महाभारत के युद्ध के पूर्व ही स्थिति विगड़ चुकी थी। गणराज्य को प्रमुख स्थान नहीं मिलता था। अम्वष्ठ नरेश महाराज श्रुतायु (अग्रसेन) ने यज्ञ किये। उनमें उस समय के सभी प्रमुख ऋषि यथा गर्ग, गोत्तम, मेत्रय, धोम्य, कश्यप, मुद्गल, आदि वुलाये गये थे। प्रथानुसार यज्ञों में पशु वलि दी जाती थी। इसी पशु वलि से १८ वें यज्ञ के समय अग्रसेन जी भारी व्यथित हुए। और शिकार के वहाने निकल पड़े। एक दिन अपने साथियों सहित एक ऐसे स्थान पर पहुँचे–जो वालुका मय था–जहां यमुना नदी कल कल निनाद करती हुई अपनी कलियां विखेर रही थी। सूर्य की किरणों में वालु का कण स्वर्णमय आभा विखेर रहा था। सिंह और गाय निःसंकोच एक ही घाट पर पानी पीते थे। सिंहनी करील की ओट में

वच्चा जनकर प्रकृति की गोद में सोंपती थी–बालक जन्म से ही वीरता के गुण ग्रहण करता था। ऐसे स्थान पर महाराज अग्रसेन को शान्ति मिली–इन्होंने कुछ निश्चय किया।

राजा रानी समाहृत्य नाग कन्यां यशस्विनाम।
पूर्वा ग्रहणास्थां च सार्ध सप्त दशैः सह ॥१११॥

तावरण्ये सुतपसा तोषयतां हरिम् ।
श्वासैश्च निराहारैः यमुनो पवने वसन् ॥११२॥

नाग रानी तथा अन्य रानियों को साथ ले नाव पर चढ यमुना के दूसरे तट पर योग साधन एवं अन्य तपस्याओं द्वारा भगवान को प्रसन्न करने लगे। (महालक्ष्मी व्रत कथा।)

युग द्वयं तपस्तेपे कालिन्दी कल कानने,
ततो आविरभवत् देवी द्योत यंती वनांतरम्।
उवाच मधुरा वाणी प्रीता लक्ष्मी दयान्विता ॥

तपसो विर मतां राजन् वैश्य वंश
ग्राहस्थस्य मनौप्यमं धर्म विद्धि सनातनम् ॥११४॥

आश्रमाः सर्व वर्णाश्च गृहस्थे हिण्यव स्थिता
कुरू मयाज्ञया तुभ्यं दास्याभि सकलार्धिकम्

यमुना के तट पर राजा अग्र ने दो युग तप किया। तब लक्ष्मी जी प्रकट होकर कहने लगी–हे अग्र तप बंद करो। ग्रहस्थाश्रम सभी वर्णों से श्रेष्ठ है मैं तुम पर प्रसन्न हूं।

तव वंशे महि सर्वा पूरिता च भविष्यति ।
त्वं स्व वंशे जाति वर्णेषु कुल नेता भविष्यति ॥

अधारभ्य कुल मेतत्तव नाम्ना प्रसिद्ध यति ।
अग्रवंशीया हि प्रजा प्रसिद्धा भुवन त्रये ॥१२७॥

भुजा प्रसादं तव वसेत नान्यस्मै प्रतिपादयेत् ।
येनसा सफला सिद्धि भूर्यात तव युगे युगे ॥१२८॥

मम पूजा कुले यस्य सोऽग्र वंशो भविष्यति ।
इत्युक्त वाऽन्तर्दधे लक्ष्मी समुद्दिश्य महावरम् ॥

तेरे वंश में धरती धन धान्य से पूर्ण होगी। तू अपने वंश और जाति का नेता होगा। आज से यह वंश तेरे नाम से चलेगा। अग्रवंशी तीन लोक में प्रसन्न होंगे। तुम सदा बल शाली रहोगे। किसी पर अत्याचार मत करना तुम्हें सफलता मिलेगी मेरी पूजा बनी रहेगी यह कहकर लक्ष्मी देवी अन्तर्धान होगई।

इत्युतकां तर्हिता देवी सोयी राज्य मथा करोत ।
स्व नाम्ना नगरं चक्रे पुरोग्रपुरा वसामहं ॥

(अग्रवंश वैश्योत्कर्ष १०)

हरिद्वारात्पश्चिमायां दिशि क्रोश चतुर्दशे ।
गङ्गा यमुना योर्मध्ये पुण्य पुण्यान्तरे शुभे ॥
चक्रे चाऽग्र नगरं यत्र शक्रो वशं गतः ॥१३०॥

हरिद्वार से पश्चिम दिशा में १४ कोस पर गंगा यमुना के बीच जहां इन्द्र वंश में किया था, अग्रनगर वसाया।

द्वादश योजन विस्तीर्ण आयत शुभम् ।
द्वापर स्यान्त कालेषु कलावादि गते सति ॥

अकरो द्वशं विस्तार ज्ञाती संवर्धयन् ततः ।
कोटि कोटि च मुद्रास्त्र निवेशयेत् ॥१३२॥

प्रसाद माला सुखदा वीथि काश्च चतुष्पथाः ।
वार्टिक पुष्पवाटि च सरः पंकजो शोभितम् ॥

देव मन्दिर वापी च गोपुर द्वार शोभिताः ।
परावतैः सारसैश्च हंसः शार्टिक मयूरकः ॥

१२ योजन लम्बा चौडा नगर द्वापर के अंत में कलि के आदि में वसाया, जहां वंश को विस्तार कर जाति को बढाया। करोड़ २ मुद्रायें वहां लगाईं। महलों की माला, सुख देने वाली गली, चौराहे, वाडी फुलवाडी कमल वाले तालाव, देवस्थान, बावडी, गौशालायें, बनवाईं जो बतख, सारस, हन्स, शाटिक, मोर से शोभित थे।

कल कोकिल गणोस्तत्र नाना विराजते ।
प्रसूत माला फलः पल्लवै द्रुमाः ॥१३४॥

पुरी विशाला गज बाज शोभिता ।
सुवर्ण रतना भरणादि संकुलाः ॥

प्रभूत यज्ञैः धन धान्य पूरिता ।
यथेन्द्र देवै भूवि चामारावति ॥१३५॥

नगरे मध्ये देश च महालक्ष्म्यात्मयं शुभम् ।
तन मध्ये कमला देवी पूजये न्निशिवा स्त्ररम् ॥

सार्ध सप्त दशैयंज्ञैस्तो षयेत् मधुसूदनम्
एकदा यज्ञ मध्ये तु वाजिमांसो अब्रवीनृपः

न मांसे जप वैकुन्ठं मध्ये दया निधे ।
उमाम्यां रहितो जीवो नहिन पापेन लिप्यते ॥१३७॥

कबूतर, कोयल अनेक पक्षी थे पेड़ अनेक फल-फूल लता-पता वाले थे, विशालपुर हाथी घोड़े से पूर्ण धन-धान्य से सम्पन्न था। नगर के मध्य में महालक्ष्मी का मंदिर था जिसमें कमला देवी की उपासना होती थी। साढ़े सत्रह यज्ञों के पश्चात् पशु वलि से घृणा होगई।

उक्त कथन से ऐसा स्पष्ट मालूम होगया है कि महाराज अग्रसेन ने अग्रोहा के बाद अग्र नगर (आगरा) की स्थापना की। प्रसिद्ध इतिहास कार पुरुषोत्तम नगेस ओक ने अपनी पुस्तक ताज महल "राजपूती महल"

"में माना है कि आगरा किसी अग्र" नामक महापुरुष का वसाया हो सकता है। इसी प्रकार हन्सराज भाटिया द्वारा लिखित 'लाल किला हिन्दू लाल कोट" है में लिखा है कि आगरा पान्डवों के शोषण का उदाहरण है। अब हमारे सामने कुछ स्पष्ट कारण हैं। जिनसे हम मान लेते हैं कि अग्रोहा महाराज अग्रसेन की पुरानी राजधानी था–जो रेवाडी से १३ मील हिसार के पास है। जिसे महाभारत मेंआग्रेय गणराज्य माना है। सिकंदर के साथ में आये यूनानी इतिहासकारों ने इसे अगल्लस या अगल्लसोई माना है। महाभारत नामानुक्रमणिका में श्रुतायु को आग्रेय गणराज्य का महाभारत कालीन राजा लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार डा० मथुरा लाल शर्माने भी अपनी पुस्तक "भारतका प्रचीन इतिहास" में अगल्लोसोई को अग्रोहा माना है। यहां पर अग्रोदक (अग्रसेन तालाव) भी था। आज भी उसका स्थान है। सिकंदर के आक्रमण तक यह संभल भी चुका था पर इस आक्रमण के वाद जब ग्यारहवीं सदी में मोहम्मदगोरी ने इस पर आक्रमण किया बिल्कुल उजड़ गया। वर्तमान स्वरूप में छोटासा ग्राम है जहां सतियों के स्थान हैं। यहीं से अग्रवाल हिसार हांसी, करनाल, नारनौल, रेवाडी, रोहतक, दिल्ली में फैले।

जैसे कि पहिले वतलाया गया है कि बार २ के आक्रमणों से परेशान होकर तथा जनता का विकास सही हो सके, बढ़ती आवादी को योजना वद्ध ढङ्ग से कार्य दिया जासके, अग्र नगर की स्थापना की। महाराज अग्रसेन के समय अग्र नगर में एक लाख अग्रवाल थे, किसी अन्य अग्रवाल के आने पर एक एक ईंट और एक २ रुपया देकर अपने समकक्ष बना लेते थे। अब सोचिये जिस नगर में एक लाख अग्रवाल हों उनके अन्य

सहायक चर्मकार, स्वर्णकार, किसान, सैनिक, ब्राह्मण, शूद्र सभी मिलाकर ४ लाख अवश्य होंगे–ये सभी आगरा (अग्र नगर) के अलावा अन्यत्र नहीं रह सकते। श्री पुरूषोत्तम नगेस ओक (ताज महल राजपूती महल था) में ताजमहल के इतिहास को ११५५ तक ले गये हैं वे उसे परमर्दिद देव चतुर्थ का निर्माण मानते हैं। श्री ओक ने मुझे (लेखक को) एक पत्र लिख कर इससे सहमति प्रकट की है और लिखा है कि मुझे ऐसा मानने में कोई आपत्ति नहीं है कि आगरा अग्र नामक किसी महापुरुष ने वसाया हो, ताज-महल भी अग्रसेन जी द्वारा निर्मित कमलादेवी, विष्णु भगवान, शिवका वही प्रसिद्ध मंदिर रहा हो-जो नगरके मध्य में था, जिसमें कमलों की उपस्थिति तथा हन्स, मोर, आदि २ पक्षियों की विद्यमानता बताई गई है। जबसे भारत पर मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हुए सन् ६३८ से १९४७ तक देश को शान्ति ही कब मिली जिसमें ताजमहल जैसे भवनों का निर्माण हो सके। ऐसा कौन होगा ? जबकि देश पर मुसलमानों का आक्रमण हो रहा था कभी गोरी कभी गजनवी सोमनाथ तक धन के लिए लूट-मार मचा रहे थे, मथुराके अनेकों मन्दिर विध्वंश कर दिये गये थे, कोई क्यों आगरा में रत्नों की जालियां, स्वर्ण की खिडकियां, चांदी के दरवाजे, लगाकर ११५५ में ताजमहल का निर्माण कराता ? तीसरा कारण है कि ताजमहल और लालकिला न एक पीढी से बनसकता है और न बना है इसका तो क्रमिक विकास हुआ है। अतः यह तो सम्भव है कि महाराज अग्रसेन द्वारा इसका प्रारंभिक निर्माण कराया गया हो बाद में गुप्त साम्राज्य में चंद्रगुप्त के समय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय अथवा समुद्रगुप्त के के समय हर्षवर्धन के समय इसको यह रूप दिया गया हो। अतः आज

तो इसकी आवश्यकता है कि आगरा स्थित ताज-महल एवं लाल किला तथा सभी अन्य इमारतों एतमतुदौला आदि के भू-गर्भ कालीन कमरे खोले जायें उनकी सफाई की जावे रोशनी की व्यवस्था की जावे। इतिहासकारों का दल इसकी खोज करे कि इनके गर्भ में क्या छुपा पडा है। सम्भवतया इन गुप्त भण्डारों में पुराने खजाने हों, अथवा मूर्तियां हों, या मुसलमान वादशाहों के लूट का सामान हो।

अग्रसेन और तात्कालीन राजनीति

अग्रसेन के पूर्वज जो भारत के पश्चिमी किनारे पर एक जनपदीय गणराज्य था–(महाभारत नामानुक्रमिणका पृष्ठ २१५) के शासक थे–वहीं पर अग्र का जन्म हुआ। बालक प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि था। बडा होने पर पास ही में स्थित कोलापुर जो अहिच्छत्रा कहलाती थी और नागवंशी राजाओं का राज्य था। जिसे वाद में अर्जुन ने द्रुपद से जीत कर द्रोणाचार्य को दक्षिणा में दी थी, (महा. ना. क्र. पृष्ठ ३०) अपना कोलगिरि जो दक्षिण में कोलाचल पर्वत के पास थी-जिसे सहदेव ने जीता था (समा. पर्व ४/१६) के राजा की कन्या से शादी की उस समय संपूर्ण देश में छोटे २ गणराज्य थे।

अतः महाराज अग्रसेन ने एक बडा राज्य उत्तर में स्थापित करने का निश्चय किया। इसलिए महाराज अग्रसेन उत्तर में आये–और अग्रोहा नगर की स्थापना करके आग्रेय गणराज्य की नींव डाली। अग्रसेन जी ने अपने चातुर्य एवं वीरता से तात्कालीन राजनीति पर भारी प्रभाव डाला।

प्रथमतः उन्होंने यह निश्चय किया कि जब तक आग्रेय गणराज्य का संबन्ध कौरव कुल से घनिष्ट नहीं होगा–तब तक सुरक्षा स्थाई नहीं हो सकेगी। अतः किसी वैश्य कन्या को महाराज धृतराष्ट्र को दे दिया-जिससे युयुत्सु नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। तथा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भी सम्मिलित हुए। आस-पास के सभी छोटे २ गणराज्यों को मिला कर एक बड़े गणराज्य की स्थापना की। इसके अलावा समाज की सर्वांगीण उन्नति करने हेतु अग्रसेन जी ने एक महान समाजवादी कदम उठाया नगर में आने वाले प्रत्येक अग्रवाल को एक एक ईंट एवम् एक एक रुपया देकर अपने समान बनाया गया, इस प्रकार समाज संगठन खड़ा किया। समस्त हिन्दू समाज (आर्य समुदाय जो उस समय था) संगठित रहे इस ओर अग्रसेन जी पूर्ण सचेष्ट थे, अतः नागवंशी यदुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, सभी राजाओं एवं आसपास के सभी गणराज्यों यथा मत्स्य, योद्वेय, शिव, त्रिर्गत, केकैय, उदयपुर, विराट, दिल्ली, आदि से घनिष्ट सम्बन्ध थे।

नागवंशी

नागवंश एवं इस वंश के राजा महाभारत काल में कितने प्रभावशाली थे इसका उदाहरण है कि जब भीमसेन को उसके भाई दुर्योधन ने षडयन्त्र पूर्वक जहर देकर नदी में डाल दिया था। तब उसकी प्राण रक्षा नागवंशी राजा सम्भवतया बासुकि ने ही की। इसी प्रकार उस नागपुर, अहिच्छत्रा, पदमावती आदि नाग वस्तियां थीं। बलरामजी जब स्वर्गारोहण को गये तब उस समय नाग राजा तक्षक वहां पर उपस्थित

थे। इसी प्रकार नागवंशी ही एक राजा जरासंघ जो नाग राजा सुवसु के के पुत्र वृहद्रथ के पुत्र थे–मगध के काफी प्रतापी राजा बने इसका श्रीकृष्ण से बरावर संघर्ष चलता रहा। अन्त में जरासंघ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने श्रीकृष्ण से संधि करली। यह प्रगाढ सम्बन्ध बलराम जी की मृत्यु के समय तक चलते रहे। बाद में परिक्षित के राज्य काल में तक्षक नामक नागवंशी राजा से उसके सम्बन्ध खराब होगये। भगवान व्यास ने काफी समझाया ५ वेदों की कथा सुनाकर भी समझौता का प्रयत्न किया परन्तु अंत में परीक्षित मारे गये। बाद में जनमेजय ने सभी नाग राजाओं के विरुद्ध भारी अभियान छेडा जिसमें इन्द्र के द्वारा समझाने पर तक्षक का जनमेजय से समझौता हो सका।

जैन हरिवंश पुराण के अनुसार नागवंशी वासुकि राजा श्रीकृष्ण कालीन थे। सुव्रत पुत्र दक्ष उस वंश की सत्रहवीं पीढी में नेमीनाथ के समय थे। बासुकि का विवाह मथुरा के राजा उग्रसेन की पुत्री वसुमति से हुआ। उसका पुत्र सुवमु जो नागपुर का राजा हुआ और महिधर भी कहलाया। उसकी पुत्री सुनेत्रा से अग्रसेन जी की शादी हुई। इस प्रकार नागवंश से संबन्ध बना। अतः अग्रसेन जी की तिथि निर्विवाद है। एक और तथ्य की ओर मैं पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि अग्रसेन जी ने—

वैशाखे पौर्णमास्यां वैविभु राज्योभिश्चिच।
राज्य सिंहासने स्थित्वा वैश्य विप्र गणैकृतः ॥१५१॥

ज्ञातीन सर्वान् अनुज्ञा प्राप्य ययौ समार्यया सह।

पंच गोदावरी यत्र तत्र ब्रह्म सरः शुभम् ॥१५२॥

तत्र भूरिस्तयस्तेये गोलोकं परतां परम् ।
जगाभ सस्त्रीकः कमलाज्ञया ॥१५३॥

वैशाख की पूर्णमासी को विभू को राज्य देकर सभी भाई बन्धुओं की आज्ञा लेकर पंच गोदावरी को गये– और वहां भारी दान तप किया। वहीं पर कमला (लक्ष्मी जी की आज्ञा से गो लोक गये)

महाभारत काल में आग्रेय गणराज्य की स्थिति

अम्बष्ठ (आग्रेय) गणराज्य की उस समय जो स्थिति थी, उसका भी वर्णन महाभारत कारने निम्न शब्दों में किया।

जाम दग्नयेन रामेण क्षत्र यद वशोषित्तम् ।
तस्माद वरजं लोके यदिद क्षत्र संज्ञितम ॥२॥

कुतोऽयं कुल सकल्प क्षत्रियै वसुर्धाधियः ।
निदेश वडिमस्तत तेह त्रिदितम् भरतर्षत्र ॥३॥

ऐल र्स्पक्ष्वाकु वशास्त्र प्रकृति परचक्षते ।
राजानः श्रेणि वद्वाःम तथान्येक्षत्रिया भुवा ॥४॥

परशुराम जी ने जब पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर दिया, तभी लुक छिप कर क्षत्रिय रहगये थे, जो पूर्ववर्ती क्षत्रियों की अपेक्षा निम्न कोटि के थे, इन्होंने नियम बना लिया था- कि जो सभी को जीत

लेगा वही क्षत्रपति होगा। ये लगभग १०० हैं जो सभी अपने को इच्छ-वाकु की संतान कहते थे।

महाभारत काल में वैश्य समाज की वृत्ति पर प्रभाव डालने के लिये निम्न श्लोक हैं।

वैश्या स्थापि हि धर्म स्ततं ते वक्ष्यामि शाश्वतं ।
दानमऽध्यनं यज्ञः शोचेन धनसंचय ॥

पितृवत् वालयेत वैश्यौ युक्तः सर्वान पशु निह ।
विकर्म तद भवेदन्यत् कर्म यत समाचरेत ॥

धर्म का पालन, दान, अध्ययन, यज्ञ, धन संचय इनकी वृत्ति है। तथा प्रजा को पिता के समान प्यार करते हैं।

गोत्र निर्णय

मूल गोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नति भारत ।
अंगिरा, कश्यपचैव, वशिष्ठ, भृगुरेवच ॥

भारत में मूल चार गोत्र थे अंगिरा- कश्यप, वशिष्ठ और भृगु।

(महाभारत शान्ति पर्व २९८)

जमदग्नि भारद्वाजो, विस्वामित्रोऽत्रि गोतमौ ।
वशिष्ठ कश्यपाऽगस्तया मुनयो गोत्र कारणः ॥

एतेषां यान्य पत्या नितानि गोत्राणि मन्यते ॥

जमदाग्नि, भारद्वाज, विश्वामित्र, अत्रि गोत्तम,

वशिष्ठ, कश्यप, अगस्त, मुनियों के नाम पर वाद में गोत्र चले। आगे चल कर गोत्रों की संख्या इतनी बढ गई कि—

गोत्राणां तिस्त्रः कोटस्य सम्बधन्ते

(प्रवर मजरी भाष्य)

गोत्रों की संख्या हजारों, लाखों, करोडों तक बन गई है इसमें यह है कि पहले गोत्र ऋषि परम्परा से वंश परम्परा से चले, इस प्रकार गोत्रों की संख्या ३ करोड तक पहुँच गई है।

मेरा मानना है कि अग्रसेन जी ने जो अठारह यज्ञ किये, उसमें प्रत्येक यज्ञ में वह अपनी पत्नी के साथ बैठे और उसमें जो ऋषि व्रह्मा बना उस रानी की वही संतान उसी ऋषि के नाम पर चले।

१- यदि गोत्र पुत्रों के नाम पर होते—तो अग्रोतनफाण्य ले० निरन्जनलाल गौतम दिल्ली, वैद्य कृपाराम अग्रवाल (अग्रसेन और अग्रवाल) एव अन्य लेखकों के अनुसार ५४ लडके हुए। इस प्रकार पुत्रों के आधार पर गोत्र नहीं चले।

२- पत्नियों के नाम पर भी गोत्र नहीं चले।

३- हमारे देश में ऋषि परम्परा चली आरही है। अतः ऋषियों ले नाम पर ही गोत्र चले।

१८ यज्ञ सर्वाधिष्ठाता-श्री अग्रसेन [अग्रसम्राट]

सं०	ऋषि	गोत्र	वेद	शाखा	सूत्र	प्रवर	उसी गोत्रके पर्याय
१	गर्ग	गर्ग	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	३	
२	गोमिल	गोमिल	"	"	गोमिल	"	गोयल
३	गौत्तम	गौन	"	"	कात्यान	"	
४	मैत्रय	मित्तल	"	"	"	"	
५	जैमिन	जित्तल	"	"	"	"	जिंदल
६	शैगल	सिंगल	[साम	कौथुमी	गोमिल	"	सिंघल
७	वत्स	वासल	"	"	"	"	बंसल
८	उरू	ऐरन	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	"	

सं०	ऋषि	गोत्र	वेद	शाखा	सूत्र	प्रवर	उसी गोत्रके पर्याय
९	कौशिक	कंसल	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	३	
१०	कश्यप	कच्फल	साम	कौथुमी	गोमिल	,,	गावाल
११	तान्डय	तिंगल	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	,,	कुंगल
१२	माण्डय	मंगल	ऋक	शाकल	आश्वलायन	,,	
१३	वशिष्ठ	विंदल	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	,,	भिंदल, विदलश
१४	भौम	धारण	,,	,,	,,	,,	डेरन, ढेरण
१५	मुद्गल	मुद्गल	ऋक	शाकल	आश्वलायन	,,	डिंगल, मधुकुल
१६	तैत्तिरीय	तायल	यजुः	माध्यंदिनी	कात्यान	,,	अतलस
१७	नागेन्द्र	नांगल	साम	कौथुमी	गोमिल	,,	नागल
१८	कुत्स	कुच्चलस	,,	,,	,,	,,	कुच्छल

अग्रसेन इतिहासकारों की दृष्टि में

प्रसिद्ध इतिहासकार जयचंद्र विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक (इतिहास प्रवेश पृष्ठ १२१) पर लिखा है कि झंग माधियाना प्रदेश में एक संघ था- जिसे यूनानियों ने अगल्लस लिखा है अत्यन्त वीरता से सिकन्दर से लडा। प्रो० हेंडरसन ने अपनी पुस्तक में इसे कडा प्रतिरोध लिखा है। विदेशी यात्री इब्नूत ने लिखा है कि अग्रोहा अति संपन्न नगर था, उसे विदेशियों ने उजाड दिया। पराज्य के बाद अग्रवाल अन्य स्थानों पर फैल गये १९३८ में पुरातत्व विभाग ने खुदवाई कराई थी, और ईसा पूर्व की अनेकों मुद्रायें प्राप्त कीं, सन् ११९५ में मोहम्मदगोरी ने इसे पूर्णतया उजाड दिया।

१- महाभारत में नकुल विजय के वर्णन में रोहतक के पास मरू भूमि बतलाई है जबकि कर्ण विजय में एवं कीचक द्वारा विजय में आग्रेय (अम्बष्ठ) को जीतना लिखा है। यानी इसी बीच में आग्रेय गणराज्य की स्थापना हुई–कर्ण की विजय यात्रा महाभारत से लग-भग १४ वर्ष पूर्व की घटना है, (विजय के बाद पान्डव १४ वर्ष वन में रहे)

२- राजा अग्रसेन के पूर्वज धनपाल और वैशालक वंश के राजा वैशालक समकालीन थे।

३- राजा वैशालक और अयोध्या के राजा कल्माश पाद एवं काशी के नरेश धर्मकेतु समकालीन थे।

४- महाभारत के बाद युधिष्ठर ने ३६ वर्ष राज्य किया।

५- राजा अग्रसेन का जन्म २१ वीं पीढी में हुआ था।

६- राजा अग्रसेन क विवाह नागवंश में हुआ था। अग्रसेन के राज्य त्याग के समय कलि के १०० वर्ष समाप्त हो चुके थे।

७- जब ये गद्दी पर बैठे द्वापर समाप्त हो रहा था। उस समय इनकी अनुमानतः आयु २५ वर्ष होनी चाहिये।

८- कलिकाल ५०७६ (१९७४) में यदि कर्ण विजय को महाभारत में कलि से ५० वर्ष पूर्व मानें तो उस समय अग्रसेन की आयु ३५ वर्ष मानें तो वह ३५ वर्ष की आयु में कौरवों के अधीन होगया।

ऐसा मानते हैं कि महाराज अग्रसेन की आयु २४ वर्ष थी। इस गणना से कलि के १०० वर्ष तक राज्य किया तो इनकी उम्र महाभारत के समय २०४-१००+३६=६८ वर्ष उम्र महाभारत युद्ध के समय इनकी थी। यह अनुमान है।

सिकन्दर के आक्रमण एवं इसके पश्चात् इसका एक वार फिर पुनर्गठन हुआ, जो बंधु आस-पास फैल गये थे इसी अग्रवंश के सपूतों ने जो भिंदल (विंदल) विंदलश गोत्रीय थे भानेश्वर में राज्य संगठन किया।।

वर्धन साम्राज्य

आदित्य वर्धन, प्रभाकर वर्धन } ५२८ ई० से ६०४ ई० तक

राज्य वर्धन— ६०४ से ६०६

हर्ष वर्धन— ६०६ से ६४७ तक

(भारतीय गोल्डन इतिहास पृष्ठ ८३ से ८८)

वैश्य होने का प्रमाण

आदित्य नामा वैस्यास्तु स्थान मीश्वर वासिनः।
भविष्यन्ति न संदेहो अन्ते सर्वत्र भूपति।।

हाकारारण्यो नामतः प्रोक्तो सार्व भूमि नराधिपः

(आर्य मंजू श्री मूल कल्प पृष्ठ ६२६)

आदित्य नाम का वैश्य राजा धानेश्वर वासी तथा उसके वंशज वैश्य राजा निःसंदेह होंगे उनमें ही जिनके नाम के प्रथम होगा हर्ष वर्धन सार्व भूम राजा होगा।

चीनी यात्री ह्यानसांग ने इसे वैश्य लिखा है, सब वैश्य सम्राटों का तिथि वर्णन देखो।

(आर्य मजू श्री मूल कल्प पृष्ठ ४५, ५४, ५६ ६२३, ६१४, ७५९, ७६०)

आग्रेय गणराज्य पर आक्रमणों का तांता

१-ईसा से३२६वर्ष पूर्व सिकंदरने आक्रमण किया, वीरतासे सामना किया,वह व्यास नदीतक आया, गोकुलचंद सिकंदरसे मिलगया, सिकंदर आगे वहीं बढा, पर युद्ध में काफी क्षति हुई, सतियों की क्षत्रियां उसी समयकी हैं।

भारत का गोल्डन इतिहास, मेकरनडल पृष्ठ ३६७ काशीप्रसाद जयसवाल

ने भी आगरा, अग्रोहा, अग्रवंशी राज्य को माना है।

२- १२० ई० में कनिष्क ने आक्रमण किया, अग्रोहा उसके आधीन हो गया। अग्रवंशी हरभज शाह की पुत्री शीला और शालिवाहन (शक संवत्) प्रर्वतक के पुत्र के मध्य प्रणय संबंध हुआ था।

३- ७१२ ई० में समर जीत तंवर या तोमर वंशियों से युद्ध हुआ उसमें अग्रोहा की भारी क्षति हुई।

४- ९९७ से १०३० तक मोहम्मद गजनवी के बार बार आक्रमण होते रहे।

५- ११९१ में मोहम्मदगोरी ने आक्रमण किया। उसने बिल्कुल उजाड दिया, तालाव सूख गया।

अग्रवालों के भेद

समय के साथ जब अग्रोहा सुरक्षित रहा, आगरा पर भी बार बार विदेशी आक्रमण हुए थे, अग्रवाल विभिन्न स्थानों पर चले गये। उसी स्थान पर रहते २ उनका गोत्र भी वही पड़ गया। स्थान के नाम से गोत्र प्रचलित हो गये। मेरा मानना है कि खंडेला से खण्डेलवाल, ओसियां से ओसवाल, मारवाड़ से मारवाड़ी, इसी प्रकार अन्य वर्ग भेद चालू हो गये। आवागमन की असुविधा के कारण शादी आदि भी पास पास होने लगीं। बाद में यह रूढ हो गई कि खंडेलवाल खंडेवाल से ही शादी करेगा। वर्तमान में अग्रवालों में निम्न वर्ग हैं।

१. बी से अगरवाल पूरे १८ गोत्र
२. मारवाडी अग्रवाल ,,

३. दस्से अगरवाल १८ गोत्र
४. महाजन अगरवाल ,,
५. राजवंशी अग्रवाल आठ गोत्र-राजा रतनचंद्र के समय में अलग हुए।
६. शूरसेनी (१० गोत्र)
७. जैन अगरवाल-गोत्र १८ धर्म भिन्न, प्रणय सम्बन्ध होते हैं।
८. गिन्दोडिये बहुत कम
९. सिख अगरवाल ,,

कुछ इतिहासिक घटनायें

१- परशुराम जी क्षत्रिय विरोध के लिये विख्यात थे, एक बार बे भ्रमण करते हुए अग्रोहा आये। महाराज से वार्तालाप हुआ। कुछ विवाद हो गया। अंत में परशुराम और अग्रसेन जी में युद्ध की नौवत आगई, युद्ध हुआ, और परशुराम जी ने श्राप दिया कि राजा निपुत्री होगा। इससे महाराज अग्रसेन को भारी दुःख हुआ, उन्होंने परशुराम जी से उपाय पूछा तो परशुराम ने कहा कि लक्ष्मी की आराधना करो, अहिंसा का पालन करो, गो रक्षा करो, कृषि करो तो पुत्र होंगे। अग्रसेन जी ने इन्हीं कार्यों को किया पुत्रों की उत्पत्ति हुई।

नोट:—परशुराम जी महाभारत के समय थे, ये भीष्म पितामह के गुरू थे। कर्ण ने इनसे शिक्षा ग्रहण की थी।

२- यदि कोई भी गरीब व्यक्ति नगर में आता था, नगर के समस्त निवासी मकान बनाने हेतु एक एक ईंट एवम् एक एक रुपया उसे देते थे, इस प्रकार एक लाख नागरिकों से प्राप्त करके वह लखपति एवम्

भवनपति बन जाता था।

३- राज्य में कोई भी भूखा नहीं सो सकता था, स्वयं महाराज भ्रमण करके देखते थे, यदि कोई भूखा रह जाता था तो महाराज उसके भोजन की व्यवस्था करते थे।

४- सभी महापुरुषों, पंडितों, साधुओं का सम्मान होता था। यज्ञों में उस समय के सभी श्रेष्ठ ऋषि आते थे।

५- इतना बीर प्रतापी सम्राट महाभारत युद्ध से बाहर नहीं रह सकता था, अतः महाभारत युद्ध में भाग लिया था।

६- जनता की सुविधा के लिये अग्रोहा में तालाब बनवाया था। उसी प्रकार अग्र नगर में जो यमुना के किनारे (आगरा) है-कूए बावडी बनवाये,

७- लक्ष्मी और शिव के आराधक थे। लक्ष्मी जी आप पर पूर्ण प्रसन्न थीं, चहुँ ओर धन धान्य से सम्पन्न नगर था।

८- अपने यज्ञ के अधिकार की घोषणा हेतु १८ यज्ञ किये, प्रत्येक यज्ञ एक से एक बढ कर था। अहिंसा का बोध होनें पर अठारवां यज्ञ आधा ही छोड़ दिया था।

९- नागवंशी कुल में विवाह किये। रानी माधुरी प्रमुख रानी थी।

१०- आज भी अग्रवालों को चंवर, और क्षत्र का अधिकार है। यह उनके सार्वभौम शासक का प्रमाण है॥

शिला लेखों पर उत्कीर्ण यश गाथा

१- अग्रोहा एवम् वरनाला में जो मुद्रायें मिली हैं उन पर अगाच्य मित्र-पदा खुदा है यानी आग्रेय और उसके मित्र राज्य, अर्थात आग्रेय और मित्रगण मिलकर प्रजातन्त्री राष्ट्र।

२- प्रभाष अभिलेख वि० १८८१

संवत् १८८१ मिती मार्गशीर्ष शुक्ल षष्टयां शुक्रवासरे कास्टा संघे माथुर गच्छे पुष्कर गणे लोहाचार्यन्वयै भट्टारक श्री जगत कीर्तिस्ततपहे भट्टारक श्री ललितकिर्तीजित तदान्नाये अग्रोतन्कान्वये गोयल गोत्र प्रयाण नगर वस्तव्य साधु श्री रायजीमल स्तदनुज फेरूमलस्तत्पुत्र श्री मेहर-चंदस्य भ्राता सुमेरूचन्द स्तदनुज साधु माणिकचंद स्तत्पुत्र साधु हीरालालेन कौशाम्बी नगर वाहय प्रभाष पर्वतोपरि श्री पदमप्रभाजिन दीक्षाहवान कल्याणक क्षेत्रे श्री जिन प्रतिष्ठा करिता अंग्रेज वहादुर राज्ये शुभं।

अर्थ—मंगसर सुदी ६ शुक्रवार वि. सं. १८८१ को कास्थ संघ में माथुर गच्छ में पुष्कर गण में लोहाचार्य के शिष्य वर्ग व अन्वय में भट्टारक जगत ऋषि ललित् कीर्ति अग्रोतनकान्वय वाले गोयल गोत्री ने प्रयाग बसने वाले साधु रायजीमल उनके छोटे भाई फेरूमल उनके पुत्र मेहर-चंद उसके भाई सुमेरचन्द उसके छोटे भाई माणिकचन्द उसके पुत्र हीरालाल ने कौशाम्बी नगर के बाहर प्रभाष पर्वत पर श्री पदम प्रभा-

जिन प्रतिष्ठा दीक्षा आवाहन कल्याण खेत में जिन बिम्ब की प्रतिष्ठा की अंग्रेज बहादुर के राज्य में शुभ हो।

३- एपि ग्रेफिका इन्डिका भाग २ पृष्ठ २४३

यहां इस लेख में स्पष्ट अग्रोतन कान्वय शब्द है। अग्र महाराज ने (अग्र+उदक) अग्रोदक बनवाया था और सारे कुल का नाम उस समय अग्रोतनकानव्य प्रसिद्ध था।

सारवन अभिलेख (लाल किले दिल्ली में १३७) वैशाख सुदी ६ बुधवार सम्वत् वि० १५१५।

स्वस्ति सर्वाभीष्ट फलं यस्य परारा धन तत्परा।
लभन्ते मनुजा स्तस्मै गणाधि पतयै नमः ॥१॥

सत्पले नामवः पातु सांत वत्यां दया सह।
प्रसादाधस्य देवस्य भक्ताः स्युः सौरण्य भाजनम् ॥

देशोऽस्ति हरियानस्य पृथिव्यां स्वर्गासिनमः।
ढिल्लि काख्या पुरीतत्र तोमरै शास्ति निर्मिता ॥३॥

जिस गणेश के आराधन से सब इच्छित फल मंगल मनुष्य पाते हैं उसको नमस्कार है। तुमको वह सत्य नाम दया सहित रक्षा करे जिसके प्रसाद से भक्त सुख को पाते हैं। हरियाना प्रदेश पृथ्वी में स्वर्ग है उसमें दिल्ली पुरी तोमरों की बसाई हुई है।

तस्यां पुर्यास्ति अपि च वाणिजामग्रोतक निवासिनाम्।
वंश श्री साचदेवारण्य साधुस्त त्रादपधत ॥६॥

उस पुरी में अग्रोतक निवासी वाणिजों का वंश उसमें साचदेवनामी साधु हुआ।

४- मंजू पृष्ठ ३२६ मंत्र सिद्धि प्रकरण

विन्ध्य कुक्षि निविष्टाश्च अग्रेन्दे च समन्ततः ॥१२॥

विन्ध्याचल की कोख में अग्र राजा के देश में मंत्र सिद्ध होते हैं।

५- अग्रवाल वैश्योत्कर्ष के अनुसार अग्रसेन की महारानी माधुरी नाग राजा कुमुद की पुत्री थी। महाभारत नामानुक्रमणिका पृष्ठ ७४ पर कुमुद को एक प्रमुख नाग बताया है (आदि पर्व ३५/१५) उद्योग पर्व १०३, १३ मौसल पर्व ४/१५ में भी इसी राजा का उल्लेख है।

६- यह अम्वष्ठ देश का राजा था, भीष्म की रक्षा करते हुए अर्जुन का सामना किया था, यह भीष्म निर्मित कोंचव्यूह के जघन भाग में खडा था, भीष्मपर्व ५६,७५,७६,२२, यह युद्ध मैं युधिष्ठर द्वारा पराजित हुआ था। इसका अर्जुन पर आक्रमण, कौरव पक्षीय योद्धा था। महाभारत नामानुक्रमणिका पृष्ठ ३६० (श्रुतायु या श्रुतायुध)

७- महाभारत नामानुक्रमणिका पृष्ठ २७६

युयुत्सु–धृतराष्ट्र द्वारा वैश्य भार्या से उत्पन्न पुत्र। इसकी करण संज्ञा थी। इसकी उत्पत्ति (आदि पर्व ११४–४३) दुर्योधन की प्रेरणा से भीम

को विष दिये जाने की सूचना भीमसेन को दे दी (आदि २८/३७/३८) द्रोपदी के स्वयंवर में गया था (आदि १८५/२) कुरूक्षेत्र के मैदान में पाण्डवों के पक्ष में आना (भीष्म ४३-१००) वह योद्धाओं में श्रेष्ठ धनुधरोंमें उत्तम, शोर्य सम्पन्न सत्य प्रतिज्ञ और महाबली था-वरणवत नगर में बहुत से राजा क्रोध में भर कर इसे मारने चढ आये पर परास्त न कर सके। द्रोण १०-५८-५९ इसके घोडों का वर्णन, सुबाहू के साथ युद्ध करके उसकी दोनों भुजाओं को काटना, भगदत्त के हाथी के द्वारा इसके रथ के घोडों का मारा जाना। अभिमन्यू वध से हर्षोल्लित कौरवों को उपालम्भ देना। उलूक के साथ युद्ध में पराजित होना। श्रीकृष्ण की आज्ञा लेकर राज महिलाओं को साथ लेकर हस्तिनापुर लौटना। विदुरजी के पूछने पर सब समाचार बतलाना, युधिष्ठर द्वारा धृतराष्ट्र की सेवा का भार सोंपना। भीष्म की अन्येष्टि के लिए चिता निर्माण में सहयोग। मरूत का धन लाने के लिए पांडवों के हिमालय जाने पर यह हस्तिनापुर की रक्षा में नियुक्त था। पाण्डव जब धृतराष्ट्र से मिलने गये-तब भी हस्तिनापुर की रक्षा का भार इसी पर था। युयुत्सु को आगे करके धृतराष्ट्र को जलांजलि दी। हिमालय को महाप्रस्थान के समय बालक परीक्षत को राज्य देने के बाद युयुत्सु को ही राज्य की रक्षा का भार सोंपा था।

अग्रोहा का स्थान

हिसार से १३ मील के अन्तर पर देहली से सिरसा जाने वाली सड़क पर अग्रोहा एक विशाल नगर था, अब इस नाम का एक छोटा सा ग्राम

है। अग्रोहा के खण्डहर ६४० एकड़में फैले हैं। विल्लोरी दाने मनकामाला, सिक्के यहां मिलते हैं, १८८९ में खुदाई हुई, जो रोक दी गई। कृषि योग्य भूमि जो पहिले तालाब था आज भी है। अग्रसेन जी का दुर्ग जिसपर बाद में पटियाला के दीवान नन्नूमल जी का भवन १७६०-१७८१ का बना है मौजूद है। टोलमी की लिखी भूगोल देखो।

अग्रोहा का विस्तार

अग्र वैश्य वंशानुकीर्तन १३१-१३६ आगरा भी अग्रसेन का बसाया है। उनके भाई शूरसेन ने उतने ही बर्ष राज्य किया और फिर तप को चले गये। एक और स्थान उज्जैन से ४० मील आगर है जो अग्रवालों की अधिक बस्ती का बसाया है। फिर गुजरात में फैल गये। गुजरात के अग्रवाल भी अपना उद्गम स्थान आगर एवं अग्रोहा को मानते हैं।

(वैद्य कृपाराम अग्रवाल)

अग्रवालों के अन्य प्रमुख स्थान

(१) हिसार (२) हांसी (३) तोशाम (४) सिरसा (५) नारनौल (६) रोहतक (७) पानीपत (८) जींद (९) कैथल (१०) मेरठ (११) दिल्ली (१२) सहारनपुर (१३) सांभर (१४) जगाधारी (१५) विद्या नगर (१६) अमृतसर (१७) अलवर (१८) उदयपुर, इन अठारह गणों से आग्रेय गण राज्य बना, अलवर, उदयपुर, शिव, मालव, मित्र राज्य हैं। अतः सिक्कों पर आगाच्य मित्रपदा लिखा गया है। आज भी अलवर से आगरा, भरनपुर, बयाना, हिण्डौन, करौली, गंगापुर, माधोपुर में जहां

अग्रवाल ज्यादा हैं। दौसा वाली लाईन में खण्डेलवाल ज्यादा हैं। सीकर के आस पास अग्रवाल हैं। खण्डेला, जयपुर, सांभर आदि में अग्रवाल ज्यादा हैं।

विद्याधरः हस्त वद्व स्वगुरुं पृष्टवान् तदा।
उरो नृपस्य चारित्रयं वंश वृत्तम् तदोद्भवं ॥१॥

श्रुतं मया महाराज भवता कृपया ननु।
तस्य सचिवस्येदानी शूरसेनस्य वैपुनः ॥२॥

वृत्तातं श्रोतु मिच्छामि कृपया परया तव।
स्वदेशं वै परित्यज्य कथमा गतः ॥३॥

विद्याधर ने हाथ जोडकर अपने गुरू से पूछा महाराज आपकी दया से मैंने उरू का चरित्र जाना अब उसके महामंत्री शूरसेन का वृतांत, वह कैसे अपने देश को छोड़कर मथुरा आया, आप की कृपा से सुनना चाहता हूं।

हरिहर उवाचः

शिष्येत्थं रुचिं दृष्टवा उवाच हरिहर स्तदा।
वैश्य वंशे समुत्पन्नः व्यापारे कुशलः तथा ॥

शास्त्रज्ञो यज्ञत्या कर्ता च गुरू भक्तश्च पुत्रक।
शूरसेनो महात्मभावै चरित्रं तस्य शृण्वताम् ॥

पुरोहितोऽहं तस्यै व वंशस्य निश्चयं ननु।
पूर्वमेव ममोत्कन्ठा चरित्रं श्रावयाम्यहम् ॥७॥

वत्स प्रश्न स्तव हययं मम मानस हर्षदः।
तवाऽपि सुरूचिकरं ध्यानेन शृणु सत्तमः ॥८॥

शिष्य की यहरुचि देख कर हरिहर बोला शूरसेन वैश्यवंश में उत्पन्न हुआ वह व्यापार बुद्धि निपुण शास्त्रज्ञ था, याज्ञिक गुरू भक्त था। पुत्र ! इस महात्मा के वृत को सुन मैं उस वंश का पुरोहित हूं मेरी पहिले ही चाह थी प्रसन्न हूं ध्यान से सुनो।

प्रारब्धं हरिहरेण गोडेनेत्थं स्वया गिरा।
सृष्टयादौ ब्रह्मा पूर्व जातः पितामहः ॥

चतुर्वेद परिज्ञाता प्राणिमात्रोद्भवः स्मृतः।
ब्राह्मणस्तु विवस्वान वे ततौ मनुर जायतः ॥

वर्णानामा श्रमाणां च क्रमशः स्थापको मनु।
तस्य पुत्र द्वयं जातम् नेदिस्टश्च इला तथा ॥

इलातः क्षत्रवंशस्य प्रारम्भोहित दाहय भवत्।
नेदिष्टादनु भागो वै ततो जातः भलन्दनः ॥

मरुतवती तस्य भार्या ततो वात्सप्रिय सुतम्।
मांकिलो मंत्र दृष्टा तुमहा विद्वान भूत सुतः ॥

धनपलिन नाम्ना वै प्रसिद्ध स्ततकुले ह्यभूत।
तेजस्वी पुरूषो सच्चरित्रस्य कारणात् ॥

वाहमणैःहिः तदा श्रेस्ठैः राज्ये प्रस्थापितः स्वयं।
नगरस्य प्रतापस्य ततः स्वामी ह्य भूतयम् ॥१५॥

हरिहर गौड ने अपनी वाणी से कहना प्रारम्भ किया, सृष्टि की आदि में ब्रह्मा चारों वेदों का ज्ञाता, प्राणी मात्र का उद्भावी हुआ उसका विवस्वान, उसका मनु हुआ वह मनु वर्णो और आश्रमों का स्थापन करने वाला हुआ उसके नेदिस्ट के अनुभाग और उसके भलंदन, भलंदन की भार्या मरूत्वती से वात्सप्रिय उसके मांकिल (तीनों मन्त्र प्रवर) हुए। तेजस्वी पुरुष थे। योग्यता के कारण ब्राह्मणों ने प्रताप नगर का राजा बनाया। इसके आठ पुत्र (१) शिव (२) अनिल (३) नंद (४) नल, (५) कुमुद (६) कुन्द (७) वल्लभ (८) शेखर हुए। नल विरक्त होकर महात्मा हो गया और हिमालय में चला गया। शेष सात भाईयों ने राज्य किया। शिव के चार पुत्र बडा आनन्द था, बाकी छोटे तीन पुत्रों ने योग ले लिया। आनन्द से अय, अय से उससे विश्य इससे वैश्य। यह सनातन धर्म नीति से वैश्य धर्म को फैलाने वाला हुआ। उसके वंश में सुदर्शन राजा हुआ। इसके दो विवाह हुए थे। सेवती रानी से धुरंधर नाम का पुत्र हुआ। नलवी दूसरी रानी का नाम था। धुरंधर से नंदिवर्धन हुआ।

धुरंधर विद्वान और रूपवान परोपकारी था। नन्दिवर्धन से अशोक, अशोक से समाधि। इसने संसार में बहुत यश कमाया। इसके समय में वैश्यों की बहुत उन्नति हुई। इसके पीछे वंश में उतार हुआ, आपसी द्वेष

के कारण वैश्यों की भारी अवनति हुई। बहुत समय पश्चात् इसी वंश में मोहनदास हुआ वह विष्णु भक्त था दक्षिण देश में उसका यश फैला। उसका पोता नेमिनाथ नैपाल को बसाने वाला हुआ। नेमिनाथ का वृन्द, वृन्द का गुर्जर, उसके हरि और उसके रंग सहित १०० पुत्र हुए। हरि शरीर से क्षीण एवं अल्पायु था। वह अपनी वृद्धावस्था में अपना राज्य रंग को देकर हिमालय में तपस्या को चला गया। पिता के इस निर्णय से क्रोधित होकर शेष ९९ पुत्रों ने विद्रोह कर दिया, वे प्रजा को सताने लगे, उन्होंने यज्ञों को नष्ट करदिया। प्रजा अत्यंत दुखी होकर याज्ञवल्क्य ऋषि के पास गई। महात्मा याज्ञवल्क्य राजा रंग की सभामें आया उसने राजा से कहा कि तेरे भाई प्रजा पर अत्याचार कर रहे हैं। इन्होंने प्रजा का जीवन नष्ट कर दिया है। धार्मिक कृत्यों को ध्वस्त करदिया है। राजन् इसका उपाय करो। उस समय सभा में उपस्थित राजा के भाई वीत-रागी साधु के इस कृत्य से बडे क्रोधित हुए और बोले यह धूर्त नंगा साधु राज कुल का अपमान कर रहा है। हे साधु शीघ्र यहां से भाग जाओ, अन्यथा तेरा सर तलवार से काट डाला जायेगा। यह बचन सुनकर महात्मा याज्ञवल्क्य ने कहा कि ये धन गर्वित हैं, अपना सुख चाहते हुए अनाचार में रत हैं। बिना दण्ड के ये अत्याचार करते रहेंगे। ऋषि ने कमण्डल में से जल लेकर श्राप दे दिया–ये सभी सूद्र होगये इनके जनेऊ गिर गये।

तभी इन पुत्रों ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे ऋषि हम आपके क्रोध योग्य नहीं हैं हमें क्षमा करो। दयालु महात्मा ने कहा कि तुम्हारे कर्मों का फल तुम्हें भोगना पडेगा। तुम वदरीकाश्रम में जाओ–हरि के चरणों

में चित्त लगाकर तप करो तुम्हारा उद्धार होगा। काफी समय तक तप करके ये द्विज भाव को प्राप्त हुए।

रंग का पुत्र विशोक, उसका मधु, मधु का महिधर शिव भक्त हुआ, जिसने महादेव को संतुष्ट कर कई वरदान पाये। उसके सात पुत्र धनवान प्रवीण हुए। बल्लभ पिता के द्रव्य का स्वामी हुआ। बल्लभ के अग्रसेन और शूरसेन दो पुत्र थे।

अग्रसेनस्य नामस्तु अष्टादश प्रकीर्तितः ।
प्रत्येकस्याः महिष्यारस्तु तस्य वै पृथ्वी पतेः ॥६८॥

अग्रसेन की अठारह रानी थीं, हरेक के ३ पुत्र और एक पुत्री हुई। शूरसेन की दो रानियां थीं, एक का नाम सुपात्रा उसके तीन पुत्र थे। और दूसरी का नाम माद्री था, इसके ६ पुत्र हुए। सभी प्रतापी और पिता को सुख देने वाले थे। बडे भाई अग्रसेन ने जब वंश वृद्धि देखी तो गोड देश में जो गंगा और यमुना के प्रवाह में था–नवीन राज्य बनाया। फिर अग्रसेन और शूरसेन ने गर्ग मुनी के कहने से यज्ञ प्रारम्भ किया। सब देशों को न्योता भेजा गया। सभी विद्वान अपने अपने वाहनों पर चढ़कर आये। प्रत्येक मुनि को शूरसेन ने ठहरने को उचित स्थान दिया।

अग्रसेन यज्ञ के अधिष्ठाता बने, ब्रह्मा का स्थान गर्ग मुनि ने संभाला १७ यज्ञ पूर्ण होगये तभी अग्रसेन जी के मन में हिंसा से घृणा होगई। उन्होंने कहा जिस हिंसा से नीच लोग नरक में जाते हैं मैं उसी में लगा हूं। वैश्यों का धर्म पशु पालन है। पशु बध पाप है, यह विचार दृढ होगया। रात्री को निद्रा भी नहीं आई। प्रातः सारे ऋषि और ब्राह्मण

पूछने लगे राजा क्यों नहीं आया ? एक पहर बीतने पर शूरसेन बुलाने गया। परन्तु अग्रसेन जी ने आने से मना कर दिया और कहा कि भाई ऐसा यज्ञ अपने को सर्वथा उचित नहीं है। अतः हम यह यज्ञ नहीं करेंगे। महाराज अग्रसेन अपने भाई के साथ सभा मण्डप में आये और सभी पुत्रों तथा पुत्रियों, रानियों कुटुम्बीजनों, विद्वानों, ऋषियों, ब्राह्मणों के समक्ष घोषणा की–कि हिंसा से पाप उत्पन्न होता है। पाप से बुद्धि में विकार, विकार से मन में अशान्ति होती है। मन की अशान्ति से कष्ट बढता है। अतः में उपदेश करता हूं कि कोई भी हिंसा न करें।

हे विद्याधर इन्हीं यज्ञों में जिस जिस यज्ञ में जिस रानी और रानी के पुत्रों ने ऋषियों से दीक्षा ली उनका वही गौत्र हुआ। अग्रसेन के वंशजों में साढे सत्रह गोत्र और शूरसेन के वंशजों में दश गोत्र हुए। यज्ञ में आये सभी विद्वान विदा कर दिये गये।

बाद में शूरसेन तप करने गये। उनके साथ दस हाथी बावन घोडे पचासी गाडी, दो सौ मनुष्य और बहुत सा द्रव्य लेकर माघ शु० ५ को यह तीर्थ यात्रा को चला।

विद्वानों के निष्कर्ष

(१) महाभारत में हुए— अग्रोतनकाव्य (निरंतनलाल गोत्तम दिल्ली)
(२) अग्रवाल वंश कौमुदी— त्रेता प्रथम भाग में।
(३) अग्रवैश्य वंशानु भीर्तन व द्वक चरितं कलि १०८ तक राज्य किया।
(४) अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास— द्वापर में ।
(५) अनूपसिंह राजवंशी— युधिष्ठर से १५५६ वर्ष पीछे।

(६) मुस्तसर हालात अग्रसेन— कलिपूर्व २४५६
(७) रामचन्द्र गुप्त— १६.७२.६४.१५.७२ आर्य सं. में।
(८) प्रभूनाथ बीए. १४७२ ८४.१६.७२ आर्य सं. में।
(९) श्री सत्यकेतु— हुए पर समय निश्चित नहीं।
(१०) बाबू हरिश्चन्द जी— कलि के प्रारम्भ में वल्लभ जी के पुत्र
(११) ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द जी— परशुराम के समय
(१२) हीरालाल शास्त्री— कलि के प्रथम में। (वैश्योत्कर्ष में)
(१३) काशीप्रसाद जयसवाल (हिन्दू राजतंत्र) नहीं हुए।
(१४) परमेश्वरीलाल गुप्त अग्रवाल जाति का विकास–नहीं था।
(१५) शंकरलाल हीराचंद ओझा— नहीं हुए।
(१६) सब भाट— हुए।

मेरा निष्कर्ष

उक्त सभी विद्वानों के विचारों का मंथन करने पर विदित होता है कि अधिकांश महाराज अग्रसेन को कलि के प्रथम अथवा द्वापर के अंत में मानते हैं अतः यह समय का अनुमान है। महाभारत के अनेकों उदाहरण से यह स्पष्ट होगया है कि अग्रसेन जी द्वापर के अंत में पैदा हुए थे। कर्ण की विजय के समय तक ये राज्य स्थापन कर चुके थे। पांडवों के वन गमन के समय में इन्होंने यज्ञों को संपन्न किया था। क्योंकि धोम्य मुनि पांडवों को उस समय रास्ते में मिले थे–जब वे द्रोपदी के स्वयंवर में जारहे थे। उसी समय पाण्डवों ने इन्हें पुरोहित बनाया था। अग्रसेन जी भी द्रोपदी के स्वयंवर में गये थे। धृतराष्ट्र से इनके सम्बन्ध थे। युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में ये गये थे। परशुराम जी नामक ऋषि द्वापर में थे

ये पितामह भीष्म के गुरू थे–कर्ण ने इनसे शस्त्र विद्या सीखी थी। आर्य संवत् और कृष्ण संवत् लगभग ठीक बैठता है। अनूपसिंह राजवंशी ने जो १५५६ वर्ष युधिष्ठिर से पीछे लिखा है–वे अगरचन्द जी आखिरी नरेश अग्रसेन के वंश में हुए हैं। ये नन्द के पौत्र तथा नन्द के पुत्र थे। जो विद्वान महाराज अग्रसेन का होना नहीं मानते वे भी आग्रय गणराज्य आगाच्य मित्रपदा की मुद्राओं की उपस्थिति मानते हैं। अतः यह निश्चित है कि अग्रसेन जी द्वापर के अंत में महा भारत काल में हुए हैं। ये अम्वष्ठ के नरेश थे। लगभग १०० वर्ष के होने के कारण श्रुतायु अथवा सेना के आगे रहने के कारण अग्रसेन कहलाते थे। अग्रोहा से आगरा, मालवा, दिल्ली, थानेश्वर में इनकी यश पताका फहराती थी।

आधार

१- अग्रवाल वैश्योत्कर्ष।
२- अग्रोतनकाव्य,
३- अग्रसेन और अग्रवाल
४- अग्रसेन वैश्योत्कर्ष,
५- भारत में मुगल राज्य,
६- ताजमहल राजपूती महल था।
७- लाल किला हिन्दू कोट है।
८- महाभारत,
९- महाभारत नामानुक्रमणिका।
१०- भारत का प्राचीन इतिहास,

११- हरि वंश पुराण,
१२- भारत का गोल्डन इतिहास,
१३- श्री लक्ष्मी महात्मय,
१४- श्री उरूचरितम्
१५- आर्यमंजू श्री मूलकल्प

अग्रसेन के उत्तराधिकारी

अग्र पुत्र नामी वेद यज्ञादष्टा दश कन्यका ।
रूपवंतः गुणाढ्याश्च धन धान्य प्रसंकुलाः ॥१३९॥

ना धना ना प्रजाः सर्व देव द्युति विभूषिताः ।
उदाराः कीर्ति विमला वारूणेन्द्रसमा भुवि ॥१४०॥

इन अठारह यज्ञों से अग्र के पुत्रों और १८ कन्याओं को जानो, कोई निर्धन निःसंतान नहीं था। सब देन शोभा से सजे उदार विमल यश इंद्र वरुण से भूमि पर थे।

विभुर्विशेचनो वाणी पावकोऽनिल केशवाः ।
सत्यं च धर्म च युग च भूतानु कम्पां प्रिय वादितां च ॥

द्वि जाति सेवाऽतिथि पूजनं च वैकुन्ठ मुनि नारदोवताः ।
विशाल रक्तौ धन्वी च धामा पामा पयोनिधिः
कुमारो दवनो माली मन्दौकन कुण्डलौ ॥

कुशो विकाशो विरणो विनोदो वपुर्नो बली ।
वीरो हरो रवो दंती दाडिमी दंत सुन्दरौ ॥

करो खरो गरः शुभ्रः पलशोऽनिल सुन्दरः ।
धर प्रखरौ मल्लीनाथो नंदो कुन्दः कुलुम्बकः ॥

कांति शान्ती क्षमा शाली पयमाली विलासदः ।
कुमारौ द्वौ पुत्रीश्च शृणु शोनक वक्ष्मिते ॥१४५॥

(१) विभू (२) विरोचन (३) वाणी (४) पावक (५) अनिल (६) केशव (७) रक्त (८) विशाल (९) धन्वी (१०) धामा (११) पामा (१२) पयं निधि (१३) कुमार (१४) दमन (१५) माली (१६) मंदोकन (१७) कुन्डल (१८) कुश (१९) विकाश (२०) विरूण (२१) विनोद (२२) विपुन (२३) वली (२४) वीर (२५) हर (२६) रव [२७] दन्ती [२८] दाडिमीदन्त [२९] मधुधर [३०] कर [३१] खर [३२] गर [३३] शुभ्र [३४] पलश [३५] अनल [३६] सुन्दर [३७] धर [३८] पुखर [३९] मल्लीनाथ [४०] वंद [४१] कुन्द [४२] कुलुम्बुक [४३] शान्ति [४४] कांति [४५] क्षमाशाली [४६] पध्यमाली [४७] विलासद, अन्य सात पुत्र।

दया शान्तिः कला कान्तिः तितिक्षा चधरऽमला ।
शिखा मही रामा रमा यामिनी जलदा शिवा ॥१४६॥

अमृता अर्जिका पुण्याष्टादश सुताः शुभाः ।
तीन तीन पुत्रान् सुतै कैकां सर्वास्वग्र समुद्भवाः ॥१४७॥

ये अठारह पुत्री अर्थात् ३-३ पुत्र और १-१ कन्या सब रानियों से हुई।

तेषु तेषु पुत्राः पौत्राः तावच्च पौतृकाः।
तैः सार्धं स भुजे राज्यं कलौ चाष्टाधिकंशतम् ॥

गोडं पुरोहितं कृत्वा वेद विद्या तपोनिधिम्।
अनायासेन पृथिवी जित्वा कीर्तिमा वाप्नुयात् ॥

पुत्र पौत्रों सहित १०८ कलि तक राज्य भोगा। विद्वान गौड ब्राह्मण को पुरोहित बनाया। सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य किया।

अथै कदातु पूजायां लक्ष्मी तमुदीरयत्।
राजन् पाहि स्वधर्मं त्वं पुत्रं देहि नृपासनम् ॥

वैशाखे पूर्णमास्यां वैविभुं राज्योभिशिच्चच।
राज सिंहासने स्थित्वा वैश्य विप्रगणै कृर्तः ॥

ज्ञातीन सर्वान् अनुज्ञाप्य ययौ सभार्ययासह।
पंच गोदावरी यत्र यत्र ब्रह्मः सरः शुभम् ॥

तत्र भूरिस्तप स्तेपे गोलोकं परतः परं।
जगाम रात्रीकः कमलाज्ञाया ॥

राजा लक्ष्मी की आज्ञा से अपने पुत्र विभु को राज्य देकर सारी जाति को उपदेश दे रानियों सहित पंच गोदावरी पर गये जहां ब्रह्मसर है। तप

करके स्वर्ग गया।

विभुस्तु राज्यमकरोत पैच्यं च नव।
लक्षं ददौ मुद्रां ज्ञातो दारिद्रयभागते ॥१५४॥

शत वर्ष गते राज्ये पुत्र नेमिरथं तथा।
अभिषिच्य गतोमृत्युं गता राज्ञी हुताशनम् ॥१५५॥

विमल शुकदेवश्च तस्य पुत्र धनंजयः।
तस्य श्रीनाथ पुत्रोऽभूत श्रीनाथस्य दिवाकरः ॥१५६॥

दिवाकरो जैन मते शिखिरं पर्वतं गतः।
तन्मतं पालया मास जनैः सर्व गणैः वृतः ॥१५७॥

अथो सुदर्शनो राजा पुत्रान नृपासनम्।
गतो वाराणसी तीर्थं सन्यासेन जहोतनुम ॥१५८॥

श्रीनाथस्य महादेवः तत्र पुत्रस्तु यमाधारः।
तस्यासीत शुभांगां मलयो वसुः ॥१५९॥

वसो राशीदृशाः पुत्रा शाखास्तस्यष्टधामवत्
मलस्य कवे नंदो विरागी चंद्रशेखरः ॥१६०॥

यस्याग्र चंद्रोऽभूत यस्मात् राज्यं कलौ।
यत्पुत्र पौत्र वंश्यैश्च सुखी स्यन्नगरः सदाः ॥१६१॥

विभु ने पिता का राज्य किया, स्वज़ातीय को दरिद्री होने पर लाख मुद्रा सहायता देता था। १०० वर्ष राज्य कर नेमिरथ पुत्र को राज्य दे स्वर्ग गया, रानी सती हो गई। नेमिरथ का पुत्र विमल हुआ उसका शुकदेव, उसका धनंजय उसका श्रीनाथ और उसका दिवाकर हुआ दिवाकर ने लोहाचार्य से जैन धर्म ग्रहण किया। वह शिखर पर गया -सभी गणों ने जैन धर्म को माना। यहां गोत्रों के स्थान पर गण बतला रहा है। यानी गोत्र गणों के आधार पर थे न कि संतान के आधार पर। इसी कारण दिवाकर को सुदर्शन ने गद्दी से उतार दिया काशी में तदोपरांत दिवाकर की मृत्यु हो गई। श्रीनाथ का महादेव आगे क्रमानुसार यमाधार, मलय, नंद,वसु। वसु के दश पुत्र थे। चन्द्र, शेखर, नंद विरागी हो गये अग्रचंद्र राजा हुआ। अतः यहां राज्य समाप्त हो गया।

अब हम अग्रसेन की रानियों का भी उल्लेख करना चाहेंगे-अग्रसेन की निम्न रानियां थीं मित्रा, चित्रा, शुभा, शीला, शिखा, शान्ता रजा, परा, शिरा, शची- सखी, रम्भा, भवानी' समा, माधुरी,। इनमें माधुरी प्रमुख रानी थी। ये अधिकांश नाग वंशी थीं। राजा अनंतदेव (नागवंशी) जो महिधर भी कहलाते थे कोलपुर अहिच्छत्रा के राजा थे महाभारत उद्योग पर्व ११०/१८ में अनंत के निवास का उल्लेख पश्चिम में किया है। ये, वलराम जी के स्वर्गारोहण के समय भी उपस्थित थे इसी प्रकार महाभारत नामानुक्रमणिका पृष्ठ १४ पर अम्वष्ठ शीर्षक में लिखा है। एक प्राचीन देश जिसे नकुल ने जीता था सिन्धु देश के उत्तर का प्रजातंत्र राज्य यूनानी लेखकों ने उस अम्बस्तनोई या अगल्लसोई लिखा है, कौरव पक्ष का एक राजा था जो श्रुतायु भी कहलाता था इसके कुछ

सैनिक पाण्डव पक्ष में भी लडे थे इसका वध अर्जुन द्वारा हुआ था, इसी प्रकार महाभारत के निम्न श्लोकों में आदि पर्व १८५/२१ (द्रोपदी के स्वयंवर में गया)। समापर्व ४/२८/ उद्योग पर्व ४/२३/ भीष्म पर्व ४५/६६/ ७१/ भीष्म पर्व ५६/७५/७६/ भीष्म पर्व ८४/१/१७ द्रोणा पर्व ६३/६०/६६ आदि सैंकडों श्लोकों में अम्बष्ठ अम्बष्ठाधिपति, अम्वष्ठेश्वर, श्रुतायु नाम से उल्लेख आया। श्री लक्ष्मी महात्मय के अनुसार भी सेना के आगे रहने के कारण अग्रसेन नाम पडा। सौ वर्षीय होने के कारण श्रुतायु कहलाता था। अतः दोनों ही नाम एक ही व्यक्ति के हैं।

महाभारतकालीन होने का सबसे बडा प्रमाण है कि सभी यज्ञों के अधिष्ठाता, गर्ग, गोभिल, गोत्तम, मैत्रय, जैमिनी, शेगल, वत्स, उरू, कौशिक, कश्यप, तान्डय, माण्डय, वशिष्ठ, धोम्य, मुद्गल, तेतरिय, नागेन्द्र महाभारत कालीन हैं। इनमें धोम्य तो पान्डवों के पुरोहित थे। अन्य युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित थे।

अब एक भ्रांति का निवारण और शेष है वह है कि अग्रवालों के साढ़े सत्रह गोत्र किस प्रकार हुए। कोई इन्हें पुत्रों से जोड़ता है कोई रानियों से। वास्तव में अग्रसेन जी ने अठारह यज्ञ किये, प्रत्येक यज्ञ का एक अधिष्ठाता था, उसी अधिष्ठाता के नाम पर गोत्र रखा गया। प्रत्येक यज्ञ में एक रानी साथ में बैठी थी। जिस यज्ञ में जो रानी साथ बैठी, जिस ऋषि ने यज्ञ कराया उस रानी का वंश उसी मुनि के नाम पर चला।

पतन के गर्त में

जब सिकंदर का आक्रमण इस देश पर हुआ उस समय अग्रवालों का

राजा अग्रचंद था। वह अग्रोहा से ही राज-काज चलाता था। सिकंदर का सामना वीरता से किया गया। जो सिकंदर विश्व विजय का स्वप्न लेकर चला था। पुरू ने उसे सिंधु के पहिले तीर पर ही रोक ही नहीं दिया, वापिस भी आने वाले रास्ते से नहीं जाने दिया। परिणामस्वरूप उसे जल मार्ग से लौटना पड़ा। रास्ते में अग्रोहा (अग्रगणराज्य) शाकल-द्वीप आदि ने सामना किया। सिकंदर घायल हुआ और मार्ग में ही भारत भूमि को पदाक्रांत करने का पश्चाताप करता हुआ मर गया। अग्रोहा भी उसी दुष्ट ने उजाड़ दिया। इसके बाद वैश्य वंश अपना घर छोड़ कर आसपास चले गये, परन्तु इनके कुछ वंश स्थान पर २ राज्य करते रहे।

नागवंश

१- शेष नाग—	११०–९० ई० पूर्व
२- भोगिन—	९०–८० "
३- रामचंद्र—	८०–५० "
४- धर्म वर्मा—	५०–४० "
५- वंगर—	४०–२१ "
६- भूतनंदी—	२०–१० "
७- शिशुनंदी—	१० से २५ ई० तक
८- यशनंदी—	२५ से ३० "
९- पुरूष दत्त	
१०- उत्तमदत्त	
११- कामदत्त	

१२- भवदत्त

१३- शिवनंदी या शिवदत्त

इन १३ राजाओं ने नागपुर, उरगपुर, नागर खण्ड में २०० वर्ष राज्य किया।

नव नाग भारशिव वंश

१- नव नाग—	१४० से १७० ई.
२- वीरसेन—	१७५ से १८० ई.
३- हयनाग—	२१० से २४५ ई.
४- त्रयनाग—	२४५ से २५० ई.
५- वर्हिन नाग—	२५० से २६० ई.
६- चरज नाग—	२६० से २९० ई.
७- भव नाग—	२९० से ३१५ ई. (प्रवरसेन के समकालीन)

इन्होंने १० अश्वमेध यज्ञ किये, हिन्दू परम्परा को आगे बढाया, शिव की अर्चना की। सभी इतिहासकारों ने इन्हें वैश्य वंशी स्वीकार किया है।

पदमावती का नागवंश

भव नाग

गणपति नाग

नागसेन

भीम नाग

स्कंध नाग
वृहस्पति नाग
देव नाग
विभु नाग
व्याघ्र नाग

मथुरा में कुषाणों के बाद नागबंशी

१- गोमित्र
२- ब्रह्ममित्र
३- दृढमित्र
४- सूर्य मित्र
५- विष्णु मित्र
६- पुरुष दत्त
७- उत्तम दत्त
८- राम दत्त
९- काम दत्त
१०- शेष दत्त
११- भवदत्त
१२- वलभूति

इनके पहिली सदी के सिक्के मिलते हैं।

ऐसा माना जाता है कि गुप्त वंश के मूल पुरुष कोई घटोत्कच के पूर्व श्री गुप्त नामक महापुरुष थे जो बंगाल के मुर्शिदावाद के आसपास राज्य करते थे।

१- श्री गुप्त (बंगाल के मुर्शिदावाद के आसपास
२- घटोत्कच २८०—३१९
३- चन्द्रगुप्त प्रथम ३१९-३२५ (लिच्छवी वंश में शादी की)
४- समुद्रगुप्त — ३२५ से ३७५
५- चंद्रगुप्त द्वितीय— ३७५ से ४१४
६- रामगुप्त— (इसकी पत्नि ध्रुव स्वामिनी ही चंद्रगुप्त द्वितीय की पत्नि बनी क्योंकि रामगुप्त ने शक राजा से पराजित होकर अपनी पत्नि को शक राजा को देने का प्रस्ताव किया। ध्रुवस्वामिनी और चंद्रगुप्त ने विरोध किया, चन्द्रगुप्त ने शक राजा को मार दिया, और ध्रुवस्वामिनी से शादी की।)

ये ही वे इतिहास प्रसिद्ध चंद्रगुप्त विक्रमादित्य हैं जो शकारि नाम से विख्यात हुए। जिन्होंने विक्रम संवत चलाया। जिनके असंख्य अवशेष यथा शिव के मन्दिर, सूर्य के मन्दिर आज भी मालव गणराज्य के आस-पास कोटा, भोपाल, झालरा पाटन उज्जैन आदि क्षेत्र में लाखों की संख्या में प्राप्त होते हैं।

७- कुमार गुप्त (अनंतदेव और देवकी पत्नि थीं)
८- स्कंदगुप्त
९- बुद्धगुप्त
१०- भानु गुप्त
११- तथागत गुप्त
१२- कृष्ण गुप्त
१३- हर्ष गुप्त

१४- जीबित गुप्त
१५- कुमार गुप्त तृतीय
१६- दामोदर गुप्त
१७- महासेन
१८- देव गुप्त द्वितीय
१९- माधव गुप्त
२०- आदित्यसेन
२१- देव गुप्त तृतीय
२२- विष्णु गुप्त द्वितीय
२३- जीवित गुप्त तृतीय

गोडों ने राज्य पर आक्रमण किया और गुप्त साम्राज्य को नष्ट कर दिया।

वाकाटक वंश

बहुत प्रतापी और वीर साम्राज्य था। दान और तप में प्रतापी थे, गुप्त साम्राज्य के अवशेषों पर खडे हुए।

१- बालटक्र
२- प्रवरसेन (सर्वनाग (अकोला जिला में)
सर्वसेन
|
३- भद्रसेन विंध्यसेन
|
४- पृथ्वीसेन प्रवरसेन द्वितीय

|
देवसेन
|
हरिसेन

मेत्रक या मौखरी वंश

गुप्त साम्राज्य के खण्डहरों पर मैत्रयपति के अनुयायीयों द्वारा स्थापित किया गया।

१. धरसेन प्रथम— ५२५–५४५
२. ध्रुवसेन— ५४५ से ५५६
३. गुहासेन— ५५६ से ५५९
४. धरसेन द्वितीय
५. शीलादित्य
६. खारा ग्रह
७. धरसेन तृतीय
८. ध्रुवसेन द्वितीय
९. शीलादित्य तृतीय
१०. " चतुर्थ
११. " पंचम
१२. " षष्टम
१३. " सप्तम्– ७६६–६७

ज्ञान संस्कृति का केन्द्र उच्च आदर्शों से प्रेरित अरव आक्रांताओं से पीडित होकर नष्ट हो गया।

कन्नोज का मौखरी वंश

यह शब्द बडा प्राचीन है मौर्य काल की एक मोहर मिली है उत्तर भारत में रहते थे, शक्तिशाली होने पर अश्वपति का वंशज सिद्ध कर राज्य किया। छठी सदी में गया के आसपास राज्य कर रहे थे, गुप्तवंश के सामंत थे।

१- हरिवर्मा (पहला राजा था)
२- आदित्य वर्मा
३- ईश्वर वर्मा
४- इषान वर्मा
५- सर्व वर्मा
६- अवन्ति वर्मा
७- गृह वर्मा को देवगुप्त (गुप्त शासक) ने पकड कर वध करवा दिया। यह घटना ६०६ में हुई।

अहिच्छत्रा के ईशा पूर्व नरेश

भद्रकोष
सूर्य मित्र
अग्नि मित्र
फाल्गुन मित्र
वृहत्स्वामि मित्र

पुनरुत्थान

डा० मथुरालाल शर्मा द्वारा अनुवादित भारत में मुगल साम्राज्य में जहांगीर द्वारा कांगड़ा विजय के प्रसंग में राजा मलय के पुत्र वसु एवं उसके पुत्र चौपड़मल का वर्णन आता है जिसमें लिखा है कि चौपड़मल ने गद्दी पर बैठते ही पंजाब के सूबेदार मुर्तजा खां को कांगड़ा जीतने भेजा। परन्तु उसकी मार्ग में मृत्यु हो गई, इसके पश्चात राजा वसु के पुत्र चौपड़मल के नेतृत्व में सेना भेजी परन्तु चौपड़मल विद्रोही हो गया। बाद में बादशाह ने चौपड़मल को पकड़ लिया और फांसी की सजा दी ऐसा प्रतीत होता है कि अग्रोहा अकबर अथवा जहांगीर के समय मुगल साम्राज्य के आधीन हो गया था परन्तु राज्य काफी शक्तिशाली था जो इसी से प्रकट होता है कि चौपड़मल के नेतृत्व में सेना भेजी। वसु का भाई नंद चौपमड़ल के बाद गद्दी पर बैठा (भारत में मुगल राज्य पृष्ठ ३४०) चौपड़मल की विद्वता एवं उसके द्वारा बादशाह का विरोध बादशाह की इस मनोवृति से प्रकट होता है कि जब खुर्रम के नेतृत्व में राजा विक्रमजीत ने इस किले को जीत लिया तो बादशाह ने वहां जाकर किले में नमाज पढ़ी, एक गाय काटी और किले को मस्जिद बनाने की आज्ञा दी। भले ही अग्रोहा परिस्थितिवश गुलाम होगया था। परन्तु उसका हिन्दुत्व प्रेम समाप्त नहीं हुआ था। वह अपने पूर्वजों की कीर्ति पताका में दाग नहीं लगा सकता था।

राजा रतनचंद का वर्णन

राजा रतनचंद का वर्णन करने से पूर्व फारुखसियर का वर्णन करना उचित होगा। जब फारुखसियर के पिता की मृत्यु हुई तो वह

इतना निराश हुआ कि उसने आत्मघात करने का निश्चय किया, परंतु उसकी माता ने उसे धैर्य बंधाया और फारुखसियर को साथ ले सैयद बन्धुओं के पास गई। सैयद बन्धुओं की उम्र इस समय ४४ और ४८ वर्ष की थी। इसने सैयद बंधुओं को फारुख सियर के पक्ष में मिला लिया, (अनुनय विनय कर) उसी समय फारुखसियर को बादशाह घोषित किया गया, उसी समय उजेनिया नामक सरदार काफी फौज के साथ इनसे मिल गया, उस समय फारुखसियर शासन के तीन स्तम्भ थे–दो सैयद बंधु और तीसरा राजा रतनचंद। राजा रतनचंद को लेखकों ने कट्टर लिखा है वह इसी से सिद्ध होता है कि इन्होंने फारुखसियर को सह। रास्ते पर चलाने का भरपूर प्रयास किया। इस कारण दरबार का धर्मान्ध गुट इनके विरुद्ध होगया, और इस ग्रुप ने फारुखसियर को छल पूर्वक गद्दी से घसीट कर मार डाला, इसके बाद फारुखसियर का पुत्र रफीयुर्जात बादशाह बना। इसके बादशाह बनते ही राजा रतनचंद ने दो काम किये।

(१) राजा अजीतसिंह की पुत्री जिसके साथ फारुखसियर ने २७ सि० सन् १७७५ को शादी की थी फारुखसियर के मरने के बाद १६ जो० १७१६ को बादशाह के अन्तःपुर से निकल कर पुनः शुद्ध करके हिन्दू के साथ शादी करके एक करोड़ की स्वर्ण मुद्रा देकर जोधपुर रवाना कर दिया।

(२) डा० मथुरालाल शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक के मतानुसार प्रथम दिन ही आदेश निकाल कर जजिया कर समाप्त कर दिया। समस्त प्रजा

को धार्मिक और आर्थिक सुरक्षा का आश्वासन दिया। उसके बाद एक वर्ष में तीन व्यक्ति गद्दी पर बैठे। परिस्थिति ऐसी थी कि कोई स्थाई नहीं रह सका।

रतनचंद का प्रभाव लेखक के शब्दों में सुनिये।

रतनचंद व्यक्ति उनके बहुत मुंह लगा हुआ था। यह अपने पद पर खूब जमा हुआ था। उसका अधिकार बहुत व्यापक था, कानूनी मामलों में यहां तक कि शहर काजियों की नियुक्ति में भी उसका हाथ रहता था। दूसरे अधिकारी पिछड गये थे। अधिकारी बिना इसकी अनुमति और मोहर के कोई काम करने से डरते थे। (भारत में मुगल साम्राज्य पृष्ठ ६५७)

इस समय शासन व्यवस्था में दो गुट थे। एक गुट धर्मान्ध लोगों का था, जो औरंगजेब की नीति पर चलना चाहता था दूसरा गुट सईद बन्धु, राजा अजीतसिंह और राजा रतनचंद का था जो धर्म सहिष्णुता में विश्वास करता था मगर इन दोनों की टकर होती रहती थी, ऐसा ही एक मामला फारुखसियर के शासन के प्रथम वर्ष में आया-जब अहमदाबाद में होली पर दंगा होगया। एक स्थान पर होली जलाई जाने वाली थी, पास के रहने वाले मुसलमानों ने आपत्ति की परन्तु उसे नहीं माना गया। दूसरे दिन मुसलमानों ने अपने घर में गाय काटी और घोषणा की कि अभी के मृत्यु दिवस पर गो मांस बांटा जायेगा। इस पर मुहल्ले के सभी हिन्दू उठे, और मुसलमानों को दबा दिया। इसके बाद उस कसाई को ढूंढा गया न मिलने पर उसके बच्चे की हत्या कर दी गई सारे

मुसलमान एकत्रित होकर काजी के पास गये। काजी ने इन्हें उत्तेजित किया और कहा कि फौजदार इनसे मिला है अतः हस्तक्षेप से इन्कार कर दिया, इसके बाद मुसलमानों ने काजी का घर जला दिया, बाजार को लूट लिया-दुकानें जलादीं, मकान जला दिये। काफी मकान जलाये गो आखिर कपूरचंद जौहरी ने मुकाबला किया, कई दिन बाजार बंद रहे और गोलियां चलती रहीं। इसके बाद दो प्रतिनिधि मंडल दिल्ली गये। एक में मुसलमान थे दूसरे में शहर काजी, कपूरचंद और एक सैनिक अफसर था। फौजदार ने लिखकर भेजा था कि कसूर मुसलमानों का है, अतः सभी कसूरवार रतनचंद के प्रभाव से पकड़े गये और जेल में डाल दिये गये। जो ख्वाजा जफर मोहम्मद नामक फकीर ने छुडवाये। इतिहासकार रतनचंद पर कट्टरता का आरोप लगता है इस समय बादशाह के कर्मचारियों में अधिकांश अग्रवाल, खत्री आदि ही थे।

(भारत में मुगल साम्राज्य से)

अग्रवाल समाज के बिखरे सुमन

संगठन सूत्र में मचल मचल हम आज पुनः बंधते जाते।
मां के शत २ खंडित मंदिर का शिला न्यास करते जाते॥

सन् ३२६ ई० पूर्व जिस समय भारत भूमि पर सिकंदर का आक्रमण हुआ था। राज परिवार के अंतरिक कलह के कारण अग्रोहा के सेनापति गोकुलचन्द तथा उसके मित्र रतनसेन ने विदेशी आक्रमणकारी से मिलकर अग्रोहा की पराजय कराई। इस भयानक युद्ध में हजारों अग्रवाल बन्धु मारे गये, शेष अपने घरबार को छोड़ कर चल पडे नियति के सहारे।

जो अग्रवाल समाज अपनी संगठन शक्ति के लिये प्रसिद्ध था, उसे ही अपने ही एक भाई के पाप का परिणाम भोगना पडा। जब व्यक्ति घर से बाहर निकलता है तो उसे अपने घर की स्मृति रहती है। परन्तु कालान्तर में वह अपने नये स्थान के नाम से भी प्रसिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार समय की गति के साथ हम अपने भाईयों को भी भूल गये, और अग्रवाल समाज ही हजारों २ जातियों में विभक्त होगया। मैं मेरे कथन की पुष्टि में प्रमुख चार अग्रवाल शाखाओं के तुलनात्मक गोत्रों की सूची प्रस्तुत करना चाहता हूं—

	अग्रवात्र	महावर	माहुर या मौहर	माथुर
१-	गर्ग	गर्गस	गांगिल	गिरगस
२-	गोयल	गोयलस	गोयल	गोयलस
३-	बंसल	बच्छल्लस	बांसिल	बांसलस
४-	सिंहल	सिंहल	चांदलस	चांदलस
५-	मंगल	मांडलस	मांडिल	मांडलस
६-	विंदल	विंदलस	बान्दिल	बोदलस
७-	कुच्छल	कुच्चलस	कोछिल	कौछलस

प्रस्तुत सारिका के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त चारों समाज अग्रवाल समाज के ही भाग हैं। स्थानीय भाषा भेद के कारण ही गोत्रों के उच्चारण में कुछ भिन्नता एवं अपभ्रंशता हैं। इसी प्रकार जब अग्रवाल विभिन्न स्थानों पर गये तो उस स्थान के नाम से प्रसिद्ध हुए जैसे कन्नोज के कन्नोजिये, मथुरा के मथुरिये, महोम के महोमिये, खंडेला के खंडेलवाल, ओसिया के ओसवाल। इस प्रकार मेरे पास लगभग ४ उन समाजों के नाम हैं जो कि वास्तव में अग्रवाल समाज के ही अंग हैं।

सौभाग्य से अग्रवाल समाज के पथ प्रदर्शकों का ध्यान इस ओर या है, तथा सारे देश में फैले हुए अग्रवाल समाज को एकता सूत्र में बद्ध करने हेतु अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का प्रयास रहा है।

उसी के प्रयास से कदीमी अग्रवालों ने एवं मारवाडी अग्रवालों ने कदमी एवं मारवाडी शब्द का परित्याग कर दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अग्रवालों के मध्य में फैले हुए खण्डेलवाल, ओसवाल वर्णवाल आदि के भेद को समाप्त करके सभी को एक मंच पर लावें। उन्हें अपने विस्तृत रूप का ज्ञान करावें, जिससे भारत भूमि के ये महान् पुत्र संगठित होकर भारत मां के गलहार के सुन्दर पल्लवित सुगन्धित पुष्प बनकर महक उठें।

दहेज के विरुद्ध झूंठा प्रदर्शन

काफी समय से अग्रवाल समाज का मुख पत्र अग्रसेन वाणी एवं नवयुवक संघ की स्थानीय इकाइयां दहेज प्रथा के विरुद्ध लेख, कविता, नाटक आदि के माध्यम से जन-जागरण का प्रयास कर रही है। जहां तक जन-जागरण का प्रश्न है शायद कोई स्थिर मन बुद्धि वाला व्यक्ति हो जो इस प्रथा के पक्ष में हो, परन्तु शिवाजी पैदा तो होना चाहिए, पर पडौस में, इसी प्रकार दहेज प्रथा बंद तो होनी चाहिये पर मेरे बाद। कितने दुर्भाग्य का विषय है। कि इतने बड़े समाज में कुछ सौ लोग भी ऐसे समर्थ नहीं निकल सकें जो यह कहें कि यह दहेज नहीं लेंगे। अपितु देखा यह जाता है अग्रवाल समाज के सभा सम्मेलनों में तख्त तोड गला भाड भाषण वीर चुपके से दहेज ले आते हैं, ऐसे अवसर पर किसी के पिताजी अड जाते हैं तो किसी की पत्नि, माता जी का अप्रित प्रेम प्रकट हो जाता है अत्यन्त वेशर्मी महानुभाव दांतों को निपोरते हुए कहते हैं भाई क्या करें इज्जत के लिए कुछ करना पड़ता है इज्जत क्या हुई, जी

का बवाल बन गई या बन गई शैतान की आंत। बने भी तो क्यों नहीं जब कुछ हजार बढ़ने पर काली लड़की गोरी बन जाये अथवा कुछ चांदी की चकाचौंध में माता के दागों का चेहरा शशी मुख में परिवर्तित हो जाये। फिर अग्रवाल समाज के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित हो कि दहेज प्रथा का कभी अवसान होगा भी या नहीं ? तो क्या आश्चर्य।

यदि हम दहेज प्रथा को मिटाना चाहते हैं तो हमें विवाह की सामूहिक पद्धति का विकास करना होगा। विवाह के अवसर पर बरात की खातिर तीन समय के भोजन के स्थान पर एक समय रखा जावे। दहेज लेने वालों के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट लिखाकर समाज का नवयुवक गवाहियां देकर दोषियों को दण्ड दिलावे। दहेज लेने वाले महानुभावों को सभा, समाज की अध्यक्षता अथवा कार्यकारिणी में कार्य करने पर रोक लगावें।

ऐसे समय में अग्रवाल समाज, समाज सेवा कर सकता है, ऐसे सभी व्यक्तियों की जो अपनी कन्याओं की शादी बिना दहेज के करना चाहें एक सूची बनायें साथ ही उनके पुत्रों की भी सूचियां बनानी चाहियें चाहे पुत्र अल्प वयस्क ही हो, सभी के संबन्ध अभी तय होने चाहियें विवाह कभी भी हो सकता है, भविष्य में शर्त तोड़ने की गारंटी १० हजार रु० क्षति पूरक हो जो उस पक्ष को दिया जावे जिस पक्ष में उसकी लड़की गई हो शेष सभी धन अग्रवाल समाज को मिले।

दहेज प्रथा को रोकने का एक उपाय और है कि समाज के उत्साही लोग आगे आयें और स्वतः स्फूर्ति से दहेज न लेने की प्रतिज्ञा करें इससे समाज का उनका मार्ग दर्शन भी प्राप्त होगा, तथा समाज के अन्य लोग भी उनका अनुकरण कर सकेंगे। जब तक समाज में त्याग वृति के लोग नहीं लेवें इस बुराई से छुटकारा नहीं पाया जा सकता।

सवाईमाधोपुर जिले में संगठनात्मक कार्य

सवाईमाधोपुर जिला उन सौभाग्यशाली जिलों में से एक है, जो अग्रवालों का संगठन करने में अग्रणी माना जाता है। आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व इस जिले में संगठन का एक ज्वार आया था। स्व० श्री श्यामलाल जी एडवोकेट, श्री ललितकिशोर जी एडवोकेट, श्री हजारीलाल जी एडवोकेट, श्री सूरजमल जी, श्री गिर्राजप्रसाद जी, श्री नारायणलाल जी मास्टर हिण्डौन आदि के अथक प्रयासों से करौली, गंगापुर, हिण्डौन में जिला अग्रवाल समाज के वृहद अधिवेशन हुए, जिनमें अग्रवाल विवाह नियमावली का निर्माण हुआ। सभी बंधुओं में अतीव उत्साह था। संगठन को श्री श्यामलाल जी गोयल का नेतृत्व प्राप्त हुआ। उसी समय कुछ स्वार्थी तत्वों ने संगठन में प्रवेश किया, और अपने स्वार्थ के लिए नियमावली को तोड़ दिया। परिणामस्वरूप समाज में भारी निराशा व्याप्त होगई। मुझे स्मरण है कि बीच में लगभग १९६० के एक ऐसा भी अवसर आया कि समस्त जिलेमें अग्रवाल बंधु अग्रसेन महाराजकी जयंती मनाने में असमर्थता व्यक्त करने लगे। ऐसे अवसर पर पुनः समाज में चेतना लाने हेतु कुछ युवक सामने आये, ऐसे युवकों में हिण्डौन में श्री दामोदरप्रसाद जी गुप्ता, गंगापुर में श्री ललितकिशोर जी बकील, श्री राघवेदास जी एडवोकेट, सवाईमाधोपुर में श्री रामजीदास जी गोयल,

श्री कल्याणमल जी गोयल आदि आगे आये। जहां इनको प्रखर कार्य शक्ति समाज में संगठन का मंत्र फूंक रहे थे वहीं अन्य बंधु अपने अपने स्थानों पर पुनः कार्य में जुट गये। अनेकों लोगों ने अपने अपने स्थान पर संगठन का कार्य खड़ा किया। मुझे स्मरण है कि मैं १९६५ में जोधपुर था तो उस समय भी मेरी इच्छा यही रहती थी कि अग्रसेन जयन्ती पर अवश्य हिण्डौन पहुँचू। कैसी भी कठिन परिस्थिति होती अवश्य हिण्डौन पहुँचता। १९६६-६७ में सवाईमाधोपुर रहा वहां पर अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में पूरा सहयोग देता रहा। १९६९ में बालघाट में अग्रवाल नवयुवक संघ की स्थापना की तथा वहां अग्रसेन जयंती का आयोजन किया। आज जिला सवाईमाधोपुर का अग्रवाल काफी संगठित है। उसने एक मासिक पत्र अग्रसेन वाणी निकाल रखा है। वर्तमान समय में श्री ललितकिशोर जी अग्रवाल एडवोकेट गंगापुर के नेतृत्व में अग्रवालों के गरीब बंधुओं की सहायतार्थ एक लाख रुपया के कोश संग्रह का अभियान चलाया जारहा है।

वर्तमान समय में निम्न कार्यकारिणी जिला अग्रवाल नवयुवक संघ की है। उसका परिचय पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

श्री कल्याणमल जी गोयल झण्डेवाला

अध्यक्ष, जिला सवाईमाधोपुर अग्रवाल संघ

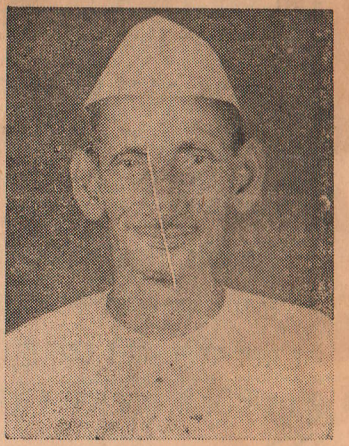

आपका जन्म १ दि० सन् १९१४ को ग्राम भगवतगढ़ (सवाईमाधोपुर में हुआ। आप में प्रारम्भ से ही जाति सेवा करने की लग्न है। अग्रवाल नवयुवक मंडल सवाईमाधोपुर के जन्मदाता हैं और आप वर्षों तक उसके मंत्री पद पर रह कर, समाज के बीच, विचारों के संघर्ष, वैमन्य एवं सामाजिक रूढियों की खाई को पाटने के महत्वपूर्ण कार्य, कठोरतम उत्तरदायित्व, युवक जीवन में व्याप्त अकर्मण्यता से छिन्न भिन्न शक्तियों को पुनः जागरण करने के लिये अमर निधि हैं।

अग्रवाल नवयुवक मंडल व अग्रवाल भवन सवाईमाधोपुर के विधान आपकी विलक्षण प्रतिभा एवं साहित्य साधना का ही ज्वलन्त प्रमाण है। आप उक्त दोनों संस्थाओं के वर्षों तक संयुक्त रूप से मन्त्री पद पर कार्य करते रहे। जून सन् १९६५ में राजस्थान अग्रवाल संघ का षष्टम् अधि-

वेशन करवाने में आपने सफल भूमिका निभाई तथा उस समय ही सवाईमाधोपुर जिला सम्मेलन के आप सफल संयोजक रह चुके हैं। यदि उस समय के पारित प्रस्ताव समाज में चलते रहते तो आज समाज का रूप दूसरा ही होता। कई विधवा विवाह आपके प्रयत्न व प्रेरणा से सम्पन्न हुए हैं। जिनमें आपका योग भुलाया नहीं जा सकता।

अग्रवाल शिक्षण संस्थान सवाईमाधोपुर के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। तथा समय समय पर अब भी पाठन विधि का पाठ देकर अध्यापकों का मार्ग दर्शन करते रहते हैं। आप जिला अणुव्रत समिति के संयोजक हैं। इसीलि ये आप समाज सुधार से भी व्यक्ति सुधार को अधिक महत्व देते हैं।

आपको जिला सवाईमाधोपुर अग्रवाल संघ "अध्यक्ष" के रूप में पाकर आशा लगाए हुए है कि आपके दिशा-दर्शन से समाज कुछ कर सकने में समर्थ हो सके।

इसीलिये आपके मुख से निम्न पंक्तियां बार बार सुनने को मिलती रहती हैं—

"सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से,
राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।
मानवता के इसी तत्व से,
ही भारत चमकेगा॥"

श्री रामदयाल जी गुप्ता महुआ

श्री रामदयाल जी गुप्ता वर्तमान समय में जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के उपाध्यक्ष हैं। इसके पूर्व आप वर्षों तक महुआ में समाजके विभिन्न पदों के माध्यम से संगठन में रत रहे हैं। आपका जन्म ५/८/१९३२ को हुआ। आपने एम. ए. बी. एड. की शिक्षा प्राप्त की। वर्तमान समय में आप हिण्डौन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक हैं। मृदु भाषण एवं सचरित्रता आपके गुण हैं।

श्री गयाजीतलाल करौली

श्री गयाजीतलाल पुत्र श्री कुद्दूलाल बजाज करौली निवासी, एम. ए. इतिहास, वर्तमान समय में जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के मंत्री हैं। इसके पूर्व स्थानीय नवयुवक संघ के मंत्री, एवं समाज के मंत्री रहे हैं, इस समय आप धर्मशाला समिति के सदस्य हैं। आपका जन्म १२/९/४१ को हुआ।

श्री भगवतीलाल गोयल

आपका जन्म करौली के चौधरी परिवार में १०/९/१९४२ को हुआ, आपने बी. ए. बी. एड. तक की शिक्षा ग्रहण की। वर्तमान में जिला

विद्यालय निरीक्षक के शैक्षिक प्रकोष्ठ में हैं। अपने कार्यकाल में बालाहेडी महू, झारेडा हिण्डौन में कार्य किया, वर्तमान में करौली में संयुक्त कर्मचारी महासंघ एवं शिक्षक संघ के अध्यक्ष हैं। वर्तमान समय में आप जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के उपमंत्री हैं।

श्री ललितकिशोर गोयल

कोषाध्यक्ष

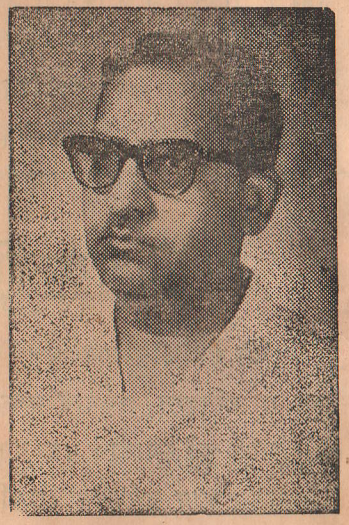

गंगापुर के वरिष्ट एडवोकेट, मिलनसार, प्रखर व्यक्तित्व के धनी। वर्तमान समय में अग्रवालों की विधवाओं, असहायों की सहायतार्थ एक लाखीय कोष के संग्रह में संलग्न, अग्रसेन वाणी के संपादक। जिला जनसंघ के भू. पू. अध्यक्ष, यह सब परिचय है, श्री ललितकिशोर जी का। जिनके सानिध्य में अग्रवाल नवयुवक संघ निरन्तर प्रगति के पथ पर बढा चला जारहा है। कठौर परिश्रम, प्रत्येक बंधु की प्राण-प्रण से सहायता ही आपका गुण है।

श्री दामोदरप्रसाद गुप्ता हिण्डौन

(संगठन मंत्री)

संगठन कुशलता, कर्मठता का ही दूसरा नाम दामोदरप्रसाद गुप्ता है, ऐसा हिण्डौन के अग्रवाल नवयुवक संघ के कार्यकर्त्ता जब कहते हैं, तो कोई असत्य बात नहीं कहते। घोर निराशा और संगठन के छिन्न-भिन्न स्वरूप को लहलाता वृक्ष बनाने में सफल व्यक्ति के रूप में आप जाने जाते हैं। वर्षों हिण्डौन में स्थानीय नवयुवक संघ के अध्यक्ष आप रहचुके हैं। वर्तमान समय में आप जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के संगठन मंत्री हैं। हिण्डौन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

श्री रघुवीरशरण सरल

अनेकों नाटकों के रचियता, अग्रचेता के लेखक श्री रघुवीरशरण सरल का जन्म ग्राम पावटा में ५/११/१९३१ को हुआ। एम. ए. बी. एड. की शिक्षा प्राप्त, वर्तमान समय में गंगापुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक के पद पर कार्यरत श्री सरल सहाब जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के प्रचार मंत्री हैं। अग्रवाल समाज की प्रत्येक गतिविधि में आपका पूर्ण सहयोग रहता है।

श्री रामजीदास जी गोयल

भू. पू. अध्यक्ष जिला सवाई-माधोपुर अग्रवाल नवयुवक संघ

आपका जन्म सन् १९३२ ई० में सवाईमाधोपुर के संभ्रांत अग्रवाल परिवार में पांचोलास बालों में हुआ। आपने बी. ए., एल. एल. बी. तक शिक्षा पाई है। सवाईमाधोपुर जाति संगठन का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। आपने वकालत के साथ साथ जाति एवं सामाजिक सेवा में बहुत योग-दान दिया है और देते रहते हैं। नगर सवाईमाधोपुर में अग्रवाल नवयुवक मण्डल कायम करने में आपका ही विशेष योग रहा है, जिसे आज हम मूर्ति रूप में देखते हैं। आप नगर पालिका के सदस्य तथा बिल्डिंग समिति के अध्यक्ष रहे हैं। नगर कांग्रेस मंडल के वर्तमान में आप अध्यक्ष हैं। राजस्थान अग्रवाल संघ के षष्टम् अधिवेशन के आप स्वागत मंत्री रह चुके हैं और जिला सवाईमाधोपुर अग्रवाल नवयुवक संघ के चार वर्ष तक अध्यक्ष रहकर शालीनता का परिचय दिया है। इस समय आप अग्रवाल शिक्षण संस्थान सवाईमाधोपुर की कार्यकारिणी के अध्यक्ष हैं।

श्री रामविलास जी खूंटामार, गंगापुर

आपका जन्म श्रावण सं० १९७९ में ग्राम शहर तहसील नादोती में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। आप प्रारम्भ से ही दानी मानी एवं समाज सेवी हैं परोपकार की ओर रुझान पैत्रिक रूप में आपको प्राप्त हुआ है श्री ओंकारेश्वर में बारह मासी प्याऊ कुड़गांव के पास जेगीरपुर में पशुओं की बारह मासी प्याऊ वर्षों से आपकी ओर से लगती चली आरही है। आप हिन्दी उर्दू एवं अंग्रेजी के ज्ञाता हैं। करीब पच्चीस साल पूर्व आपने गंगापुर में आकर आढ़त का व्यवसाय प्रारंभ किया और इस समय सुवालाल रामबिलास के नाम से नई मण्डी गंगापुर में कार्य चल रहा है। आप व्यापार मंडल के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। आप सन्१९५२ में अग्रवाल समाज के तीनों क्षेत्रों की एडहाक कमेटी के सदस्य रह चुके हैं।

आप अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष हैं। आपके कार्यकाल में धर्मशाला की प्रगति तीव्र गति से हुई है। इसके अतिरिक्त आप गंगापुर गोपाल गौशाला ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष भी हैं एवं श्री बद्रीनाथ जी मन्दिर अग्रवाल खण्डेलवाल धर्मशाला की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आप हसमुख एवं विचारशील हैं और जिस कार्य में जुट जाते हैं पूरा करके ही बताते हैं। आपने जिला अग्रवाल नवयुवक संघ की आजी-वन सदस्यता स्वीकार कर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। आपके सद्-प्रयत्नों से यह आशा है कि आजीवन सदस्यता को काफी प्रगति मिलेगी।

श्री राघवदास जी गोयल

एडवोकेट

गंगापुर सिटी (राजस्थान)

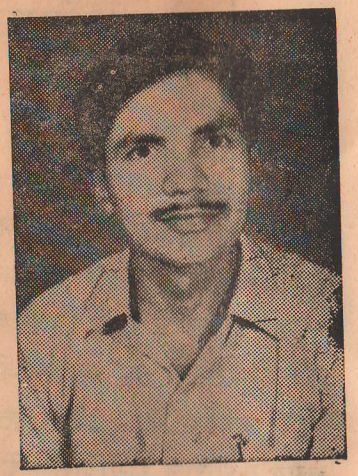

आपका जन्म दि० २३/७/४० को ग्राम पावटा में कानूगो परिवार में हुआ। आप प्रारम्भ से ही अध्यवसायी महनती एवम् निर्भीक हैं। आपने बी० काम०, एल० एल० बी० परीक्षा पास करके अभिभाषण कार्य सन् १९६४ से प्रारम्भ किया। विद्यार्थी काल में गगापुर विद्यार्थी परिषद जयपुर की स्थापना में योग दिया और उसके प्रथम मंत्री रहे। वर्तमान में भी आप सात संस्थाओं में उत्तरदायित्व पदों पर आसीन हैं। अग्रवाल नवयुवक संघ गंगापुर के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। अभिभाषक संघ के उपाध्यक्ष हैं। श्री बद्रीनाथ जी मन्दिर एवं अग्रवाल खण्डेलवाल धर्मशाला गंगापुर के मन्त्री हैं एवं गंगापुर अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट के सहमंत्री हैं। शिक्षा क्षेत्र में भी आपकी रुचि सराहनीय है। वर्तमान में आप शिव शिक्षा निकेतन के कोषाध्यक्ष हैं। जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के मंत्री व कोषाध्यक्ष रह चुके हैं और इस समय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सरकार की ओर से भगत की कोठी ट्रस्ट के ट्रस्टी मनोनीत हुए हैं। आपने जिला अग्रवाल नवयुवक संघ की आजीवन सदस्यता स्वीकार करके सराहनीय कार्य किया है। आशा है समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करेंगे।

श्री भगवतप्रसाद जी गर्ग, अध्यापक

आत्मज श्री सेठ गिर्राजप्रसाद जी गर्ग

जन्म तिथि– २१ अगस्त १९३७ शिक्षा– बी० ए०, बी० एड०

प्रारंभ से ही एक परिश्रमी एवं लग्नशील व्यक्ति रहे हैं। छात्र जीवन में आप अपने विद्यालयों में सदैव छात्रसंघी एवं अध्यापकीय जीवन में कई बार अध्यापक संगठनों के अध्यक्ष एवं मंत्री पद पर रह चुके हैं। आप नवयुवक मण्डल, गुढ़ाचन्द्रजी के लगातार ३ वर्ष तक मंत्री रहे हैं, जिसके कारण स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में परिवार नियोजन केन्द्र का निर्माण जो जिले का मात्र एक उदाहरण है, आपके प्रयासों के फलस्वरूप ही हो पाया है। गुढ़ चंद्रजी में श्री दाऊजी महाराज का मेला एवं साप्ताहिक हाट का प्रारम्भ आपके ही द्वारा कराया गया है। आपका निर्माण कार्यों में इतनी रुचि है कि स्थानीय उच्च माध्यमिक शाला में आपके प्रयासों के फलस्वरूप कमरों का निर्माण एवं मरम्मत का कार्य पूर्ण होपाया है।

आप पंचायत समिति सिकराय जिला जयपुर में शिक्षा प्रसार अधिकारी जैसे जिम्मेदार पद पर ३ वर्ष कार्य कर चुके हैं। वहां के क्षेत्र

वासी आपकी कर्तव्यनिष्ठा ईमानदारी एवं तत्परता की आज भी भूरी २ प्रशंसा करते हुए नहीं थकते।

आप सदैव जाति सुधार के कार्यों में बड़ी लग्न से कार्य करते रहते हैं। जिला सवाईमाधोपुर अग्रवाल नवयुवक संघ कार्यकारिणी के आप लगातार उसके प्रारम्भिक समय से वरिष्ठ सदस्य हैं।

श्री द्वारकाप्रसाद जी गुप्ता
B. Com. (R. S. A. C. S.)

आपका जन्म ७/६/१९३८ को हुआ। वर्तमान समय में आप जिला विद्यालय निरीक्षक करौली के कार्यालय में कार्य करते हैं। वर्षों तक करौली अग्रवाल नवयुवक संघ के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान समय में आप जिला अग्रवाल नवयुवक संघ की कार्यकारिणी के सदस्य हैं तथा धर्मशाला समिति करौली के सदस्य हैं।

श्री ईश्वर जी खरेटा वाले

श्री ईश्वर जी खरेटा वाले का जन्म १५/१/१९३८ को हुआ। आप सन् १९६४ से ग्राम खरेटा के सरपंच हैं। नगर जनसंघ के मंत्री; जिला जनसंघ के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट हिण्डौन के कोषाध्यक्ष हैं, तथा जिला अग्रवाल कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

श्री जगदीशप्रसाद जी गुप्ता, एडवोकेट

श्री जगदीशप्रसाद जी गुप्ता का जन्म ३/७/१९३१ को हुआ। बी. ए. एल. एल. बी. तक शिक्षा प्राप्त, श्री गुप्ता जी वर्तमान समय में १९५६ से हिण्डौन में वकालत कर रहे हैं। आर्य समाज की गतिविधियों में आपका निकट सहयोग रहता है। आप जिला अग्रवाल नवयुवक संघ की कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

श्री मथुरालाल जी गोयल

पुत्र श्री कल्याणप्रसाद जी **जन्म सं० १९९०**

श्री मथुरालाल जी गोयल ग्राम खेडा (हिण्डौन) पटवारी पास एक नवयुवक उत्साही कार्यकर्त्ता हैं–तथा वर्तमान समय में खेडा अग्रवाल नवयुवक संघ के अध्यक्ष एवं जिला अग्रवाल नवयुवक संघ के सदस्य हैं।

–: सदस्य :–

श्री कुन्जविहारीलाल गोयल	भगवतगढ़	सदस्य
श्री ललिताप्रसाद गोयल	सवाईमाधोपुर	,,
श्री मोहनलाल गोयल	बहरांवडा खुर्द	,,

श्री प्रहलादकुमार गुप्ता	बोंली	,,
श्री भरोसीलाल ठेकेदार	छोटी उदेई	,,
श्री रामभरोसे एस डी. आई.	सपोटरा	,,
श्री कान्तीचन्द चौधरी	करौली	,,
श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता	हिण्डौन	,,
श्री राधेश्याम गोयल सरपंच	सूरौठ	,,

निम्न सज्जनों का प्रोत्साहन हमें इस पुस्तक के प्रकाशन में प्राप्त हुआ है। मैं इन सभी का आभारी हूं।

करौली उपजिला—

१- श्री भगवतलाल हरिचरणलाल चैनपुर वाले, करौली
२- ,, द्वारिकाप्रसाद जी गुप्ता, करौली
३- ,, भगवतीलाल गोयल, करौली
४- ,, प्रकाश बीडी फैक्ट्री, करौली
५- ,, गयाजीत जी अध्यापक
६- ,, रामगोपाल सेठ, करौली
७- ,, गिर्राजप्रसाद जी गुप्ता बकील
८- ,, झूमरलाल अग्रवाल
९- ,, परसराम कोकिलाराम जी बजाज
१०- ,, हुकमचन्द जी आर्य, मासलपुर

११- ,, रामदयाल जी अग्रवाल (गुप्ता) अनाज मण्डा, करौली
१२- ,, लक्ष्मीनारायण गोयल, वन विभाग करौली

हिण्डौन उपजिला—

१- डा० श्री सूरजमल जी गुप्ता, हिण्डौन
२- श्री गजानन्द जी मसान
३- ,, दामोदरलाल जी गुप्ता
४- ,, जगदीशप्रसाद गुप्ता एडवोकेट
५- ,, भगवतप्रसाद गर्ग, गुढाचंद्र जी
६- ,, ईश्वर जी खरेटा वाले
७- ,, बाबूलाल जी गुप्ता
८- ,, रामदयाल जी गुप्ता अध्यापक
९- ,, बाबूलाल जी ठेकेदार
१०- ,, मथुरालाल गोयल, ग्राम खेडा
११- ,, राधेश्याम गोयल ग्राम खेडा

गंगापुर उपजिला—

१- डा० श्री लोहरेराम जी, गंगापुर
२- श्री ललितकिशोर जी अग्रवाल एडवोकेट
३- ,, राघवदास जी गोयल एडवोकेट
४- ,, रामविलास जी खूंटामार
५- ,, रघुवीरशरण जी "सरल" अध्यापक
६- ,, हरिचरणलाल जी एडवोकेट, गंगापुर
७- ,, रामभरोसी जी ठेकेदार

सवाईमाधोपुर—

१- श्री कल्याणमल जी गोयल झण्डेवाला

२- ,, ललिताप्रसाद जी गोयल एडवोकेट

३- ,, डा० पुरूषोत्तमलाल जी बंसल, सवाईमाधोपुर

मुझे प्रसन्नता है कि आप अपने परिश्रम में सफल होंगे और अग्रवंश के ऐतिहासिक तथ्य समाज के सामने उद्घाटित कर एक नया मार्ग दिखा सकोगे। मेरी शुभकामना आपके साथ है। ● ● ●

कल्याणमल झन्डेवाला
अध्यक्ष
जिला अग्रवाल नवयुवक संघ

⁂ भूल सुधार ⁂

१. पृष्ठ ६ पर वंश वृक्ष में महाराज अग्रसेन के पश्चात् महाराज विभू राजा हुए। उनके बाद उनका पुत्र नेमीनाथ राजा हुए।

२. पृष्ठ २३ की पंक्ति ७ में पांच वेदों की कथा के स्थान पर पूर्वजों की कथा पढें।

● ●

आमों के आम गुठलियों के दाम

जनहितकारी अल्प बचत एवं ऋण-दायत्री संस्थान प्रा. लि. की आकर्षक योजनाओं

में

धन लगाईये एवं अपने भविष्य को उज्जवल बनाईये।

योजना—

ग्रुप (अ)

१०) रु० प्रतिमाह से ५० माह तक जमा कराने पर ५२५) रु० प्राप्त होगा।

ग्रुप राजदूत

२०) रु० प्रतिमाह ६० माह तक जमा करवाकर १२५०) रु० प्राप्त कीजिये।

इसके अलावा दोनों ग्रुपों में प्रतिमास प्रथम ग्रुप में ५०१) रु. प्रथम पुरस्कार, १० पुरस्कार ५०) रु. प्रति पुरस्कार मुफ्त। इसी दूसरे ग्रुप में हर छठे माह राजदूत मोटर साईकिल या ४५००) रु. नकद, एवं प्रतिमाह एक स्टील अलमारी, एक साईकिल, एक स्टील सीट, ५ अलार्म घडी, १० स्टोव, मुफ्त इनामें दी जाती हैं।

नोट—सदस्यगणों को ऋण योजना का भी पूरा लाभ मिलता है। इस प्रकार छोटी २ बचतों से सदस्य बडे २ कार्य सम्पन्न कर सकता है।

श्री बाबूलाल गुप्ता
मैनेजिंग डाईरेक्टर

श्री विष्णुकुमार प्रधान
अध्यक्ष

पुस्तक मिलने का पताः–

गिर्राजप्रसाद अग्रवाल

साहित्य सुधाकर, आर. एम. पी.

C/o गोपाल जनरल स्टोर

डैम्परोड, हिण्डौन सिटी (राजस्थान)

मुद्रकः—

शर्मा प्रिंटिंग प्रेस, हिण्डौन।